

RAJBIL26868/2016/1284525



सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद, देश व प्रदेश की लोकप्रिय मासिक पत्रिका



हिन्दी मासिक पत्रिका

जून 2023

पेज संख्या : 28

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख



डिजिटल राजस्थान, समृद्ध राजस्थान

CSC
ACADEMY
Computer Course

सरकारी नौकरी के लिए
आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स

Rajasthan Knowledge
Corporation Limited



RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498 - 13798, 79767 - 52935

हम प्रकृति को पोषण से संचित करे आज, संरक्षित हो सुरक्षित होगा हमारा कल

आप सभी को विश्व पर्यावरण दिवस की शुभकामनाएं
आइये मिलकर प्रकृति को संरक्षित करें



www.linkedin.com/company/hindustanzinc
www.instagram.com/hindustan_zinc

www.facebook.com/HindustanZinc
www.twitter.com/hindustan_zinc
www.twitter.com/CEO_HZL

Hindustan Zinc Limited Yashad Bhawan, Udaipur-313004 Rajasthan, India. T: +91 294 6604000-20 | www.hzindia.com

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाश
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
लक्ष्मणसिंह राठौड़

वितरण विभाग
सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स,
द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद
मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से
प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर,
कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती
गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद व
आभारी है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी
विचार हैं। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

- कवर स्टोरी 1 : हमारा ही गुनाह, तभी आ रही प्राकृतिक आपदाएं पेज- 4
- व्यंग्य 2 : असली देशद्रोही हैं पथभ्रष्ट ड्यूटी चोर व उनके आका पेज- 7
- पुस्तक समीक्षा : जज्बातों का सुंदर गुलदस्ता है पेज - 8
- मन भायो राजसमंद : राजसमंद के पर्यटन स्थल पेज- 10
- चिंतन : गहराई से सोचो, आपकी जिंदगी का कोच कौन है ? पेज - 12
- कविताएं : (1) पिता (2) आदत पेज - 13
- साहित्य की खबरें : साहित्यकार स्व. मधु को श्रद्धांजलि पेज - 15
- व्यंग्य : रोशनी छीन के घर घर से चिरागों की (अजीब मंजर) पेज - 16
- मेरा गांव मेरे लोग : भंवरलालजी वागरेचा पेज - 20



सम्पादकीय

पर्यावरण संरक्षण कब ?

पर्यावरण संरक्षण से ही जल, वायु व भूमि के प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सकता है। बायोडायवर्सिटी की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण संरक्षण का महत्व बहुत ज्यादा है। साथ ही ग्लोबल वार्मिंग सरीखे हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए भी पर्यावरण संरक्षण बहुत आवश्यक है। पर्यावरण अर्थात् वनस्पति, प्राणी और मानव जाति सहित सभी सजीवों और उनके साथ संबंधित भौतिक परिसर को पर्यावरण कहते हैं। वास्तव में पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, मानव के साथ उससे जुड़ी सभी गतिविधियों के परिणाम का समावेश है।

विज्ञान में असीमित प्रगति व नए आविष्कार की स्पृहा के चलते प्रकृति पर लगातार दुष्प्रभाव पड़ रहा है और इसी वजह से प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। वैज्ञानिक उपलब्धियों के आगे प्राकृतिक संतुलन को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जा रहा है। जनसंख्या की वृद्धि, औद्योगीकरण एवं शहरीकरण के चलते भी प्रकृति की हरियाली को समाप्त किया जा रहा है। आज लोग अपनी प्रगति के लिए पर्यावरण को दांव पर लगा रहे हैं, जिसके घातक परिणाम खुद के साथ पूरे मानव समाज को भुगतने पड़ रहे हैं और भुगतने पड़ेंगे।

लगातार बढ़ते जल, वायु व पर्यावरण के प्रदूषण की वजह से प्रकृति काफी दूषित होती जा रही है और यही हालात बने रहे, तो भविष्य में पूरे मानव समाज के लिए जानलेवा हालात उत्पन्न हो सकते हैं। बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए ही तो वर्ष 1992 में ब्राजील में विश्व के 174 देशों का एक पृथ्वी सम्मेलन आयोजित किया गया था। फिर वर्ष 2002 में जोहान्सबर्ग में पृथ्वी सम्मेलन में भी सभी देशों को पर्यावरण संरक्षण के लिए विशेष ध्यान देने के लिए उपाय बताए गए थे। फिर भी लोग पर्यावरण संरक्षण की दिशा में गंभीर नहीं हैं और न ही शासन, प्रशासन द्वारा भी इसे उस दृष्टि से इतना गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है। अब पर्यावरण के संरक्षण से ही धरती पर लोगों के जीवन का संरक्षण संभव है। अगर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रयास नहीं किए गए, तो पृथ्वी पर मानव व अन्य जीव जंतुओं का जीवन भी खतरे में पड़ जाएगा।



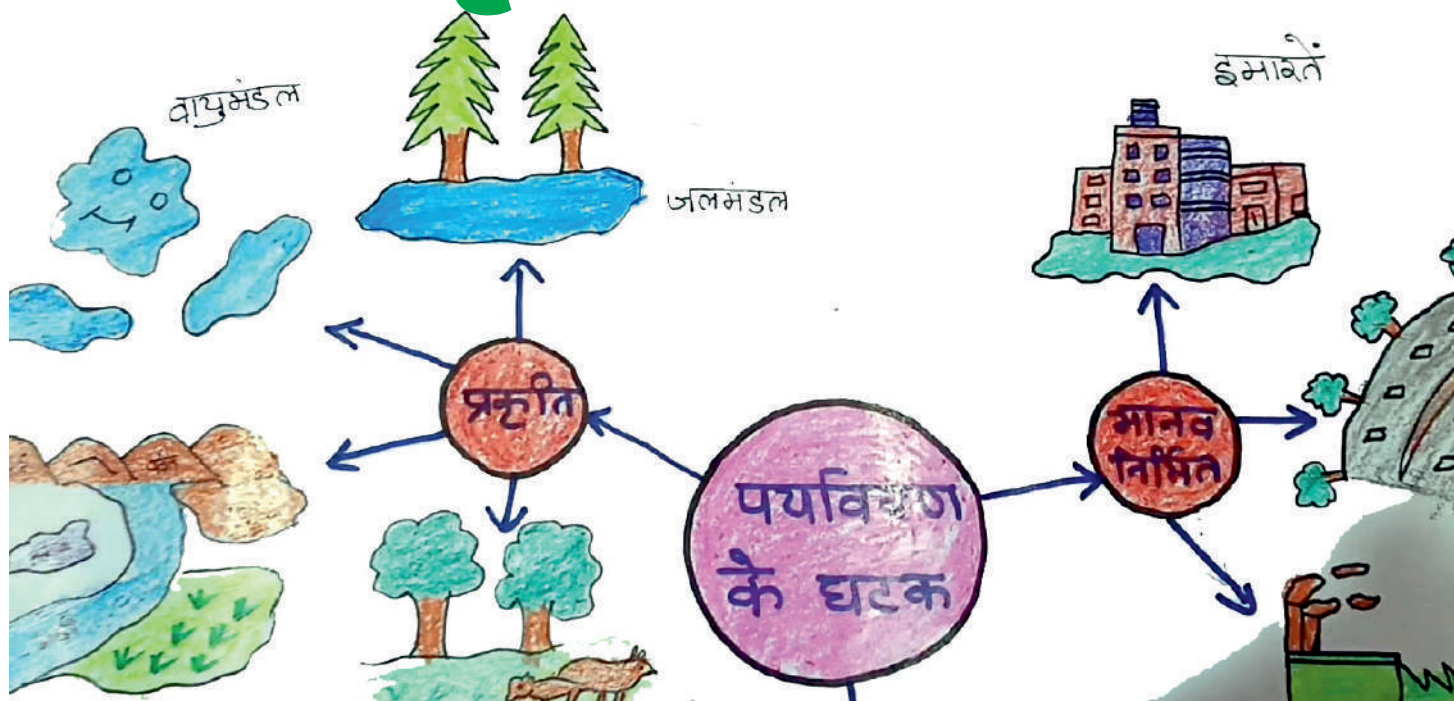
लक्ष्मणसिंह राठौड़
वरिष्ठ पत्रकार, राजसमंद

देखिए, इस अंक में खास

- | | |
|---------------------------------------|----------|
| 10. लघु कथा : पुरानी फाइल | पेज - 24 |
| 11. सबक : जल है तो कल है... | पेज - 25 |
| 12. मेवाड़ी चौपाल : कागद कंवर साहब रो | पेज - 26 |

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 9672980901

हमारा ही गुनाह, तभी आ रही प्राकृतिक आपदाएं



आज आप देख रहे हैं मौसम में कितने बदलाव आ गए हैं। बारिश में सर्दी, सर्दी में गर्मी और गर्मी में सर्दी एवं बारिश का तो कोई ठिकाना ही नहीं, कभी भी आसमान में बादल छा जाएंगे और बारिश शुरू हो जाएगी। एक तरह से मौसम का पारिस्थिकीय तंत्र ही गड़बड़ा गया है। पहले सर्दी, गर्मी, बारिश के चार चार माह लगभग तय थे और क्रमिक रूप से ही गर्मी, सर्दी के बाद वर्षा ऋतू आता था, मगर आज मौसम का पूरा क्रम ही लगभग गड़बड़ा सा गया है। इसी वजह से आज कब, कौनसा मौसम आ जाए, कोई कहा नहीं जा सकता है। ऐसे में लोगों को हर मौसम में सर्दी से बचाव के कपड़े, बारिश का रैन कोट हमेशा तैयार रखने पड़ रहे हैं। कब बारिश आ जाए और कब मौसम में ठंडक गुल जाए, इसका अब कोई भरोसा नहीं है। साथ ही प्राकृतिक आपदाएं भी लगातार बढ़ रही हैं, तो इसके लिए भी कहीं न कहीं हम ही जिम्मेदार हैं। हाल ही बिपरजॉय तूफान का खतरा भी उसी का परिणाम है।

मौसम के क्रमिक सिस्टम में आए बदलाव के लिए कहीं न कहीं आज हमारा मानव समाज और हम ही जिम्मेदार हैं। इसके पीछे मुख्य वजह पर्यावरण संरक्षण का अभाव। चौतरफा फैलता प्रदूषण है, जिसकी वजह से पर्यावरण लगातार प्रदूषित हो रहा है और उसी वजह से प्रकृति में कई बदलाव देखे जा रहे हैं। अब हर मौसम में कोई दूसरा मौसम आ जाता

है, जिसकी वजह से कई लोग बीमार भी हो रहे हैं।

अनियमित मौसम के चलते कभी तेज गर्मी, लू के थपेड़े तो कभी बेमौसम बारिश हो जाती है, तो कभी ओलो की बारिश होना भी आम बात हो गई है। गर्मी भी कहर ढा रही है, तो ओले भी कहर बरपा रहे हैं और बादल फटने, बाढ़ सरीखे हालात उत्पन्न होने से प्रकृति में कई विपरीत परिस्थितियां उत्पन्न हो रही हैं। इसके पीछे ओजोन परत के लिए यह पर्यावरण घातक है और इसी वजह से लगातार भूकंप की घटनाएं भी बढ़ रही हैं, जो भी हमारे जन जीवन के लिए मुश्किलें पैदा कर रहे हैं। ऐसे में यह मौसम न तो मानव जीवन के लिए अनुकूल रहा है और न ही इस धरती पर रहने वाले अन्य जीव जन्तुओं के लिए उचित रहा है।

जिस तरह से आज इंसान अपने स्वार्थ के खातिर सब कुछ दांव पर लगा रहा है। इससे न सिर्फ रिश्ते टूट रहे हैं, बल्कि इंसानियत और मानवता ही दांव पर लग चुकी है। इसके पीछे कहीं न कहीं खुद का स्वार्थ ही हावी है। आज हमारे देश में जो भी त्रासदियां आ रही हैं या जो भी कोई आपदा की आफत आ रही है, उसके पीछे भी कहीं न कहीं मानव समाज ही जिम्मेदार बताया जा रहा है।

खास बात यह है कि बिगड़ते मौसम के मौसम, पर्यावरण में बढ़ते खतरे को लेकर समाज, स्वयंसेवी संगठन, नेता, अफसरों के साथ

केन्द्र हो या राज्य की सरकारें, सब चिंतित है और इसके लिए कोई प्लान भी बने, कानून भी है, मगर, इसकी पालना कोई नहीं करता। ऐसे में इस तरह की चिंता करने, चर्चा करने, बैठकें करने की क्या सार्थकता है। जब कोई शासन, प्रशासन, नेता, समाजसेवा का दंभ भरने वाले कोई ठोस कदम उठाना ही नहीं, चाहते हैं, तो फिर ऐसी चिंता से क्या फर्क पड़ने वाला है। ऐसे में लगता है कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा

में कोई ठोस प्रयास होने मुश्किल है और लोग ऐसे परेशान होते रहेंगे और प्रकृति अपना रौद्र रूप लगातार दिखाती ही रहेगी। क्योंकि हम तो सुधरने वाले है नहीं, तो फिर प्रकृति में बदलाव आने भी स्वाभाविक है।

लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के चलते प्रकृति के आंगन को खोद रहे हैं, लूट रहे हैं। पहाड़ अब मैदान बन रहे हैं, तो जंगल से पेड़ काटे जा रहे हैं। ऐसे में हवा का प्रदूषित होना और प्राकृतिक आपदा को बढ़ना भी स्वाभाविक है। मतलब यह है कि लोगों को यह सब कुछ पता है कि मैं जो काम कर रहा हूँ, यह प्रकृति के विरुद्ध है, मगर मुझे क्या परवाह। मुझे तो मेरे स्वार्थ की सिद्धि करनी है। शहर हो या गांव, सब जगह नई बस्तियां व कॉलोनियां बढ़ रही है और उसके लिए पहाड़ काटे जा रहे हैं तो जंगल को भी साफ किया जा रहा है।

सभ्य समाज में जियो और जीने दो के सिद्धांत की बात करते हैं, मगर हम लोग इतने खुदगर्ज हो गए हैं कि अपने मकान के लिए वन्य जीव जंतुओं के घरों को उजाड़ रहे हैं। इसी वजह से अब वन्यजीव आबादी क्षेत्र में आ रहे हैं, जिसकी वजह से आए दिन मानव और वन्यजीवों का आमना सामना हो रहा है, जिसके कई बार परिणाम जानलेवा भी सिद्ध हो रहे हैं, मगर फिर भी कोई गंभीर नहीं है कि आखिर इसके लिए क्या प्रयास किए जाने चाहिए।

सामाजिक बैठक हो या राजनीतिक सभा या प्रशासनिक मीटिंग का प्लेटफॉर्म, उस जगह तो हर कोई पर्यावरण की चिंता करेगा और एक दूसरे को सख्त निर्देश भी देंगे और प्रकृति को नुकसान पहुंचाने की वजह से आने वाले समय में जो घातक परिणाम होंगे, वह भी बड़ी ही सभ्यता से बताते हैं और बोलते हैं, मगर उस बैठक, सभा व मीटिंग से बाहर निकलने के बाद उन्हें उन बातों से कोई सरोकार नहीं है। ऐसे में सवाल उठ रहे हैं कि सबकुछ जानकर भी अनजान क्यों बन रहे हैं लोग। आज शहर हो या गांव, सब जगह पेड़ों की जगह मोबाइल के टावर खड़े हो गए हैं।

हर साल सरकारी महकमे हो, स्वयंसेवी संगठन हो या आम लोग, सभी विश्व पर्यावरण दिवस पर अच्छे अच्छे संदेशभरी पोस्ट सोशल मीडिया पर वायरल करेंगे और एक पौधा रोपकर उसका फोटो सोशल मीडिया पर वायरल करेंगे और अन्य लोगों को बताएंगे कि मैंने एक

पौधा रोपा है, चाहे बाद में पानी के अभाव में सुख कर नष्ट हो जाए, उसकी उन्हें कोई चिंता नहीं है। कुछ यही हालात अब पर्यावरण दिवस के रह गए हैं। आज सभी दिवस एक तरह से फॉर्मलिटी मात्र होकर रह गए हैं। पर्यावरण दिवस पर नेता, कार्यकर्ता व अफसर गला फाड़कर चिल्लाते व चीखते हैं कि पर्यावरण संरक्षण के लिए समाज में जनजागृति लानी है,

मगर मंच से उतरने के बाद कोई मतलब नहीं।

पर्यावरण संरक्षण के लिहाज से डींगने हांकने वाले कुछ लोगों का तो शायद धरती पर अवतरण ही इसलिए हुआ है कि वे लोगों में पर्यावरण के प्रति चेतना पैदा करेंगे, मगर खुद उसकी पालना करें या न करें। उससे कोई मतलब नहीं। पौधरोपण की बातें की जाती हैं और पर्यावरण प्रदूषण की वजह से घातक परिणाम भी बताए जा रहे हैं, मगर उसके परिणाम जमीनी स्तर पर कहीं भी नजर नहीं आते। अब लगता है कि बार-बार पर्यावरण संरक्षण की चिंता के भाषण व पौधरोपण के संकल्प की बजाय एक एक पौधा भी रोपा होता है, तो अब तक कई हद तक पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बेहतर कार्य हो और आज जो प्रकृति की दुर्गति हो रही है,

उसका सामना नहीं करना पड़ता।

आज हमारी सच्चाई तो यह है कि हम इतने लापरवाह व खुदगर्ज हो चुके हैं कि हमें अच्छे भाषण देने व संकल्प लेने की आदत है, मगर पर्यावरण संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाने से कोई सरोकार नहीं है। आज पर्यावरण के साथ ही लोगों का दिल व दिमाग भी लगता है प्रदूषित हो गया है और लगातार प्रदूषित होता जा रहा है। क्योंकि पर्यावरण की पूरी आबोहवा ही ऐसी हो गई है, जिसकी वजह से ही आज चौतरफा पर्यावरण में उलटा-पुलटा ही हो रहा है। इसके लिए हमारा सभ्य समाज व हम ही जिम्मेदार है।

अगर लोग अपनी हद में रहे, मर्यादा में रहे, तो कई हद तक पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बेहतर कार्य हो सकते हैं, मगर आज तो नैतिकता से कोई लेना देना ही नहीं रह गया है। आज मानवीय संवेदना, सेवा, परोपकार तो सिर्फ भाषण व संकल्प तक सीमित होकर रह गए हैं। भौतिक रूप से कोई कार्य नहीं करना चाहता है। ऐसे में लगता है कि तेज व प्रेरक भाषण तो सिर्फ नौटंकी होकर रह गई है। जब तक लोगों के मन मस्तिष्क का प्रदूषण साफ नहीं होगा, तब तक पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कोई बेहतर कार्य होना मुश्किल लग रहा है। साथ ही जागरूकता के आयोजन की बजाय सरकारों को भी सख्त कानून लागू करने और सख्ती से कार्रवाई करने की जरूरत है, तभी हमारा पर्यावरण संरक्षित हो पाएगा। अब हर व्यक्ति यह सोचे कि आखिर मेरी वजह से पर्यावरण को कहां नुकसान हुआ है और क्या फयदा। अगर इस तरफ ध्यान दे दिया, तो निश्चित ही पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बेहतर कार्य होंगे।



असली देशद्रोही हैं पथभ्रष्ट ड्यूटीचोर और उनके आका

हर आदमी के लिए विधाता ने मनुष्यता का आवरण देकर अपने कर्तव्य कर्म को पूर्ण करने के लिए उसे धरा पर भेजा हुआ है। यह सभी प्रकार के कर्म उसके स्वयं के लिए, घर-परिवार के लिए और समाज के लिए निहित हैं और इन्हीं की पूर्णता से उसके समग्र व्यक्तित्व का विकास होता है। इस कर्तव्य कर्म को पूरा करने के लिए लोग कहीं सीधे और कहीं उल्टे रास्तों का अवलम्बन करते हैं। कई लोग जमाने की हवा और चकाचौंध से प्रभावित होकर अपने कर्तव्य को गौण बना देते हैं और दूसरी गलियों तथा चौराहों एवं सर्कलों पर पूंगी बजाते हुए लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं।

कइयों के लिए कर्तव्य कर्म सबसे ऊँचा होता है, जबकि कई ऐसे स्वनामधन्य महान व्यक्तित्व के धनी लोग होते हैं, जिनके लिए कर्तव्य गौण हो जाता है या यों कहें कि उनका ऐषणाओं से घिरा कद बहुत बड़ा होता है और कर्तव्य की फ्रेम बहुत छोटी। कइयों के लिए कर्तव्य कोई मायने नहीं रखता और ये लोग दुनिया जहान के सारे काम करते हैं, सिवाय अपनी ड्यूटी के। अपने लिए निर्धारित ड्यूटी के सिवा इनसे कुछ भी करा लो, पूरे आनंद से करेंगे। लेकिन जहां ड्यूटी की बात आएगी, वहां नाम सुनते ही नाक भौं सिकोड़ेंगे और दूर-दूर भागने लगेंगे। इनके लिए इनके कार्यस्थल किसी चौपाटी या धर्मशाला से अधिक महत्त्व नहीं रखते, जहां, जब इच्छा हो घुस आए और जब मन किया बाहर निकल गए।

इंसानों की एक ऐसी ही प्रजाति पिछले कुछ दशक से पनपी और पसरी हुई है, जिसे औरों की थाली में घी और चूरमा दिखता है, औरों का आनंद ही स्वीकार्य लगता है और चाहते हैं कि अपना कर्तव्य कर्म और निर्धारित ड्यूटी को छोड़कर उन कामों में रमे रहें, जिनमें कम समय में और बिना किसी मेहनत के पूरी आरामतलबी के साथ बहुत ज्यादा पैसा, वर्चस्व और लोकप्रियता प्राप्त होती रहे।

इसके लिए काम से दूर भागते रहने के आदी इन लोगों का सदैव प्रयास यही रहता है कि उन बाड़ों में दुबके रहें, जहां कोई खास काम-धाम न हो, पूरी मौज-मस्ती के सारे प्रबन्ध मुफ्त में उपलब्ध हों तथा जिनके माध्यम से वो सब कुछ पाया जा सके, जो केवल निर्धारित ड्यूटी से हासिल नहीं हो सकता, चाहे कितनी ही ईमानदारी और निष्ठा से अपने फर्ज क्यों न निभाते रहें।

इनका एकमेव मकसद दुनिया की छाती पर छा जाने का होता है और इसके लिए वे सभी सम सामयिक स्टंटों और उखाड़-पछाड़ में माहिर होते हैं। ऐसे लोगों के लिए यह बात कोई मायने नहीं रखती कि उनकी हरकतों या करतूतों से किसे कितना नुकसान हो रहा है या होने वाला है।

ये सिर्फ और सिर्फ अपने फायदों की ही सोचते हैं और इसी के लिए डग आगे बढ़ाते हैं। ऐसे लोग अपने कर्तव्य कर्म का पूरा लाभ जरूर लेते हैं, लेकिन उसे धत्ता दिखाते हुए वे सारे काम करते हैं जो उनके विहित कर्तव्य की परिधि में कभी नहीं रहे। ऐसे महान लोग अपनी शौहरत के फेर में हर कहीं मुंह दिखाते या निकालते हुए आसानी से देखे जा सकते हैं।

जिन्दगी में एक बार किसी आदमी की गाड़ी कर्तव्य की मुख्यधारा से भटक जाती है। फिर वह कभी लाइन पर नहीं आ पाती। वह इधर-उधर भटकता ही रहता है। हमारे आस-पास ऐसे लोगों की खूब भीड़ छाई हुई है, जिनके लिए अपने कर्तव्य से कहीं ज्यादा दूसरे काम और मनोरंजन हावी हो गए हैं। इस किस्म के भटके हुए लोग कहीं भी जाए सकते हैं। दुर्भाग्य यह है कि ये लोग खुद अपने कर्तव्य के प्रति वफादार नहीं हुआ करते, लेकिन जहां मौका मिलता है, वहां ड्यूटी और आदर्शों की गला फाड़-फाड़ कर दुहाई देने लगेंगे, जैसे कि दुनिया में आदर्श फैलाने का ठेका इन्होंने ही ले रखा हो।



कई लोग ऐसे हैं जिन्हें समाज की सेवा के लिए किसी न किसी एक हुनर में प्रशिक्षित और दीक्षित कर काम-धंधों और नौकरियों पर लगाया हुआ होता है, लेकिन इनके मूल हुनर और कर्तव्य कहीं पीछे रह जाते हैं और ये निकल पड़ते हैं, उन रास्तों पर जिन्हें दुनियाई सफर में शॉर्ट कट वाला माना जाता है। इनमें वे लोग भी हैं, जिन्हें हुनरमन्द बनाने के लिए समाज और राज का खूब सारा धन खर्च होता है और समाज को यह आशा होती है कि क्षेत्रा या विषय विशेष में दक्षता पा जाने के बाद ये समाज के काम आएं, अपने हुनर से नई पीढ़ी को लाभान्वित करेंगे और अपनी मेधा-प्रज्ञा और दक्षताओं का उपयोग समाज के लिए करेंगे।

लेकिन यह सब मिथ्या सिद्ध होता है। इन पर खर्च हुआ सारा पैसा पानी की तरह बिना किसी उपयोग को दर्शाए बेकार ही बह निकलता है और ये किसी ऐसे बाड़े में घुस जाया करते हैं, जहां इनकी सीखी हुई दक्षता और हुनर की बजाय ऐसे-ऐसे काम करने की इनकी मौलिक रुचि परवान पर रहती है, जिनसे समाज का कोई भला नहीं हो सकता, केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति ही हो सकती है।

ऐसी खूब सारी भीड़ है, जो चकाचौंध और टकसाली ढेरों को देख कर भटक गई है और अब इनके जीवन का एकमेव उद्देश्य अपने स्वार्थ की पूर्ति करना ही रह गया है। सब तरफ ऐसे-ऐसे लोग हैं जिनके गठबंधन भी बन जाया करते हैं। चोर-चोर मौसेरे भाई से भी बढ़कर अब डकैत-डकैत सगे भाई का मुहावरा जन्म ले रहा है। फिर इनके आकाओं की भी कहीं कोई कमी नहीं होती। कान और लंगोट दोनों के कच्चे आकाओं को खुश करने के लिए जो कुछ जरूरी होता है उसका इंतजाम करने में ये ड्यूटीचोर और एक्स्ट्रा कमाई के दीवाने पीछे नहीं रहते। तभी इन पर

**सन-शाइन इंस्टीट्यूट
ऑफ आईटी
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स**



**RKCL Tally, DTP,
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र PGDCA**

प्रवेश प्रारम्भ

पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा

मो. 9649813798, 9950084705

फेवर्टी चौराहा, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

गणमान्यों और लोकप्रियों का वरद हस्त ताजिन्दगी बना रहता है।

लोग इन कर्तव्यहीन लोगों के बारे में सब कुछ जानते-समझते हुए भी चुप रह जाते हैं, क्योंकि इस किस्म के लोग उन सभी प्रकार के समझौतों, समीकरणों को बिठाने और जी-हूजरी में माहिर होते हैं जो एक संस्कारी और शालीन व्यक्ति पूरी जिन्दगी कभी नहीं कर सकता, चाहे उसके लिए उसे कितना ही खामियाजा उठाना क्यों न पड़े।

जब किसी भी व्यक्ति

का नाता मूल कर्तव्य से छूट जाता है, फिर वह जो कुछ करें, उसका अपना कर्तव्य हो उठता है। इसमें न कोई वर्जनाएं हैं न कोई बंदिश। जब सब कुछ उतारकर उतर ही गए हैं नदी में नंगे तो आगे किससे लाज। वैसे भी इन जैसे लोगों के लिए नंगे-भूखे भिखारी और इनसे मिलते-जुलते शब्द ज्यादा फबते हैं।

सच तो यह है कि अब ऐसे-ऐसे चेहरे सामने आ रहे हैं जो मौलिक हुनर की बजाय जमाने के अनुरूप अपने नए-नए हुनर विकसित कर रहे हैं। हमेशा परायी चाशानी में तर रहने के आदी ये लोग कभी सूखे नहीं रह सकते। इन्हें जिन्दा रहने के लिए हमेशा आर्द्रता चाहिए। फिर चाहे वह चाशानी की हो या कीचड़ की, इन्हें क्या फर्क पड़ता है।

इनकी थूंथन इतनी तीव्र संवेदनशील होती है कि हमेशा इन्हें पूर्वाभास हो ही जाता है कि कहां कौनसी गंध पसरने वाली है। फिर ये लोग उसी दिशा में तेजी से लपक पड़ते हैं। ऐसे लोग अपने अनुकूल गंध पाकर कहीं भी लपक सकते हैं। इनके लिए कोई रास्ता वर्ज्य नहीं हुआ करता। जिस रास्ते ये चले जाते हैं, वह रास्ता इनका हो जाता है। बीच में कहीं कोई बाधा दिखे तो कभी गुर्ग देते हैं, तो कभी एकान्त में धीरे से दुम नीचे दबाकर विनम्रता की जीवन्त मूर्ति हो जाते हैं। भिड़ना हो तो कहेंगे साण्ड हैं और झुक जाना हो तो गाय के जाए कहकर पतली गली निकाल लेते हैं।

कभी-कभी तो इन पथभ्रष्टों को देखकर लगता है कि शायद कहीं उनके बीज और संस्कारों में तो कोई दोष नहीं है। क्योंकि उनके पुरखों में ऐसा कोई लक्षण नहीं देखा गया, जो इनमें कूट-कूट कर भरे हुए हैं। कई तो ऐसे हैं जो पुरखों के साथ बदतमीजी और अन्याय ढाने वालों के साथ ऐसे चिपक जाते हैं, जैसे कि इनके दांये या बांये वृषण ही हों।

फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि ऐसे लोगों के कारण अपने इलाकों में कहीं न कहीं कुछ न कुछ हमेशा घटित होता रहता है। ऐसे लोग हर युग में रहेंगे और उनकी करतूतें भी। फिर ऐसे लोगों की वजह से वे लोग भी जिन्दा बने हुए हैं, जिन्हें ऐसे ही लोगों की जरूरत हुआ करती है, जो दिन-रात उनकी परिक्रमा करते हुए जयगान करते रहें। यह जयगान ही उनके लिए विटामिन्स और न्यूट्रीन्स का काम करता है।

जहां कहीं ऐसे लोग मिलें, उन्हें जीते जी हार्दिक श्रद्धांजलि और तिलांजलि अर्पित करने के सिवा हमारे पास और कोई चारा है ही नहीं। क्योंकि कहीं इनकी करतूतों की चर्चा भी होती है, तो ये दूसरों की कब्र खोदने की परम्परा का निर्वाह करके ही दम लेते हैं। ऐसे लोगों की वजह से ही यह कहावत बनी है - गंगा गए गंगादास, जमना गए जमनादास। राम की भी जय, रावण की भी जय।



डॉ. दीपक आचार्य

वरिष्ठ साहित्यकार

महालक्ष्मी चौक, बांसवाड़ा

मो. 9413306077

जज़्बातों का सुंदर गुलदस्ता है 'छूने को आकाश चला मैं'

कवि प्रमोद सनाढ्य का कुछ दिनों पूर्व ही एक अद्भुत ग्रंथ आया था, 'श्रृंगार दर्शन' जिसमें श्रीनाथजी के वर्षभर होने वाले प्रत्येक श्रृंगार का मनोहारी छंदोबद्ध चित्रण था। उक्त पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने प्रमोद को भक्त कवि उपाधि से विभूषित किया था। तब मुझे आशंका हुई थी कि कहीं प्रमोद जी अपने कवि को भजन लेखन में ही अर्पित न कर दें, परंतु यह प्रसन्नता का विषय है कि वे आध्यात्मिक से पुनः सामाजिक की ओर लौट आए हैं। इसका प्रमाण है उनका सद्यः प्रकाशित कविता संग्रह 'छूने को आकाश चला मैं'।



संग्रह की लगभग सभी कविताएं प्रमोद जी की ही तरह शिष्ट और विनम्र हैं। इनमें खुरदरापन न होकर गोपालदास नीरज के गीतों की सी मुलामियत है। ये सभी लयात्मक हैं। लय को साध पाना बहुत कठिन काम है, क्योंकि वह अनुशासन की मांग करता है। वही कवि लय को साध सकता है, जो स्वयं अनुशासित हो। नीरज ने एक स्थान पर कहा है- 'छंद एक अनुशासन है, बंधन है। हमारे जीवन में छंद है, लय है, सुर और ताल है। ब्रह्मांड, सृष्टि और प्रकृति अद्भुत अनुशासन में बंधे हैं। 'लय' अनुशासन को संभव करता है। बिना लय के अनुशासन अकल्पनीय है। अनुशासन भी एक लय है और लय क्या है? एक क्रमबद्धता है। क्रमहीनता अराजकता है, जो मनुष्य और समाज के जीवन में व्यतिक्रम उत्पन्न करता है।

कविता के प्रति कवि की धारणा समझने के लिए मैं विचारार्थ आए संग्रहों में प्रायः ऐसी पंक्तियां ढूंढने की चेष्टा करता हूँ जो कविता को लेकर लिखी गई हों। कई कवियों ने कविता पर कुछ न कुछ लिखा है। मैं अपने नगर के ही कवियों की बात करूँ, तो वरिष्ठतम कवि-कथाकार क्रमर मेवाड़ी कविता को हथियार की तरह लेते हैं। वे अपनी 'कविता हथियार भी है' शीर्षक कविता में कहते हैं-

मैं भी अभी तक यही मानता था/ कविता हथियार नहीं होती/ पर उस दिन/ जब वे लोग तिलमिला उठे/ और मेरी कविता को करने लगे लहलुहान/ तब मैंने समझा/ कविता हथियार का काम भी करती है'

सुप्रसिद्ध गीतकार त्रिलोकीमोहन पुरोहित के अनुसार, 'कवि



प्रमोद सनाढ्य

योद्धा है/ कलम है अस्त्र/ और/ अर्थवान शब्द विन्यास है/ कवि योद्धा का/ अमोघ अस्त्र'। अर्थात् पुरोहित के यहां भी कविता हथियार ही है। गौरतलब है कि कवितारूपी हथियार किसी को मारने काटने के लिए प्रयुक्त नहीं होता, बल्कि मनुष्य की कुंठाओं को छिन्न-भिन्न करने की भूमिका निभाता है। अब जरा देखें कि कवि प्रमोद सनाढ्य कविता के बारे में क्या कहते हैं। वे 'क्या है कविता' में

लिखते हैं, 'कविता शब्दों का मेल नहीं/ ये जज़्बातों की धारा है/ संवेदन की सरिता में ये/ भीझा एक किनारा है, इसी कविता में वे आगे कहते हैं, 'यही धारिणी धीर धरा सी/ यही अगन अंगार है/ ये आंचल नीले अंबर सा/ दिनकर तेज अपार है।' प्रमोद कविता के दोनों पहलुओं की बात करते हैं। एक तरफ कविता संवेदनाओं की सरिता और भावनाओं का प्रवाह है तो दूसरी तरफ जलता हुआ अंगारा है, सूर्य का अपार तेज है। 'छूने को आकाश चला मैं' संग्रह पढ़ते हुए हम दोनों ही तरह की कविताओं से गुजरते हैं। यह जरूर है कि यहां जज़्बातों की धारा अधिक है और अगन अंगार कम, जैसी कि प्रमोद की स्वयं की प्रकृति है, परंतु इन कविताओं में कहीं-कहीं सूर्य के ताप का अनुभव तो हो ही जाता है।

आइये पहले हम जज़्बाती कविताओं का जिक्र करते हैं। इन कविताओं में पारिवारिक रिश्तों की उष्णता है, राष्ट्र प्रेम है, सपनों की कोमल बुनावट है, प्रेम की चंचलता और गहराई है, ईश्वर आराधना है, गांव का सौंदर्य है, मौसम की रवानी है। ऐसी कई कविताएं हैं, उदहरणार्थ- शीर्षक कविता छूने को आकाश चला मैं, ये मेरे देश की धरती, प्रेम-दीवाना, प्रणय सूत्र, मन की बात सुनो..., एक शहीद मैं भी कहलाऊँ, माँ की वंदना, बेटी आई मेरे आँगन, नारी सम्मान, शहीद की याद, अब तो सावन आओ, मेरा सुंदर गाँव, नारी श्रृंगार, मैं झण्डा हिंदुस्तान हूँ आदि इन कविताओं में आई पंक्तियाँ उद्धरणीय एवं याद रखने योग्य हैं। शीर्षक कविता 'छूने को आकाश चला मैं' अपनी चतुष्पदियों में कई-कई अर्थ समेटे हुए है, 'कभी भोर का साया बन कर/ घोर निशा को तोड़ चला मैं' कड़े संघर्ष की अभिव्यक्ति है, जो आगे चलकर इस चतुष्पदी में और भी सघन हो उठती है, 'सूरज की किरणों से खेला/ अंधियारों को हंसकर झेला/ तनहाई में चला अकेला/ मेले में गुजरा बन मेला'। ये पंक्तियाँ रवीन्द्रनाथ टैगोर की तरह संघर्ष पथ पर हँसते-हँसते आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करती हैं। इस कविता की एक और चतुष्पदी है जो मुझे सर्वाधिक

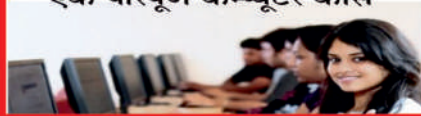
सशक्त लगी, 'कभी बना मीनार का पत्थर/ मंजिल बन गई मुझ पे चढ़कर/ गगन चूमती कई इमारत/ इतराती मेरे ही दम पर'। यों तो ये पंक्तियां वास्तुकालविद प्रमोद सनाढ्य के जीवन का अक्स हैं, परंतु मैं इनमें एक दूसरी छवि भी देखता हूं। ये श्रमिक वर्ग के मनोभावों को भी अभिव्यक्त कर रही हैं। भवन निर्माण पूर्ण होने के पश्चात जब कभी कोई श्रमिक इसके सामने से गुजरता है तो वह मन ही मन पुलकित होता है कि इस आलीशान रचना की दीवारों में उसका भी पसीना लगा हुआ है।

'एक शहीद मैं भी कहलाऊँ' कविता की ये पंक्तियां देखिए, 'चेहरे पे हंसी आँखों में चमक फूलों सी मुस्कान रहे/ दिल में मेरे श्रीमद्गीता बाइबल और कुरान रहे/ समरसता का रहूँ पुजारी सर्वधर्म समभाव रहे/ लबों पर मेरे सबसे पहले प्यारा हिंदुस्तान रहे।' ये है कवि का धर्म। ये है सच्चा कवित्व। एक जिम्मेदार सर्जक कभी भी तोड़ने की बात नहीं करता, वह मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने की बात करता है। प्रमोद जी को पता है कि आज देश जिस दिशा में जा रहा है, उससे हिंदुस्तान का भला होने वाला नहीं है। देश को भाईचारे और समरसता की जरूरत है, यही एक फेविकोल है जो देश को बांधकर रख सकता है। हमें अपनी सदियों पुरानी गंगा-जमुनी संस्कृति को जिंदा रखना चाहिए। यह संदेश प्रमोद जी जैसा कवि ही दे सकता है, वरना जब हम सोशल मीडिया पर जाते हैं तो अच्छे-अच्छे लेखकों के दिलो-दिमाग पर जाले चढ़े हुए पाते हैं। 'मैं झण्डा हिंदुस्तान हूँ' कविता भी कुछ इसी तरह का संदेश देती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भावपूर्ण और रोमानी कविताओं के बीच प्रमोद जी ऐसा भी कुछ रच जाते हैं, जो देश के हालात पर गंभीर टिप्पणी के रूप में सामने आता है। जैसे 'कवि कविता कब लिखता है' की ये पंक्तियाँ, 'मजहब के दो शब्दों से जब देश को तोड़ा जाता है/ भोली-भाली जनता को राहों से मोड़ा जाता है/ तब देख दशा जो भारत की व्याकुल मन हो जाता है/ फिर मानवता की अलख जगाने कवि कविता लिखता है'।

मानवता की अलख जगाने वाले कवि प्रमोद जानते हैं कि आज धर्म के नाम पर जो खेल खेला जा रहा है, उसके पीछे कौन खिलाड़ी हैं, उनकी मंशा क्या है, उनका निशाना कहां पर है। प्रमोद का मन सर्वाधिक उस भोली-भाली जनता को देखकर व्याकुल होता है, जो बिना आगा-पीछा सोचे पीछे-पीछे चलने लगती है और सबसे ज्यादा नुकसान में रहती है। ऐसे में कोई भी कवि कलम उठाए बिना नहीं रह सकता। इसी को किसी कवि के द्वारा हथियार उठाना कहते हैं। ऐसी स्थितियों से रचनात्मक धरातल पर जूझते हुए मानवता का संदेश देना एक कवि के लिए योद्धा होना है। संग्रह में माँ, बेटा, पिता, भाई के लिए भी बहुत प्यारी कविताएँ हैं, जो पारिवारिक रिश्तों के प्रति प्रमोद सनाढ्य की गहरी संलग्नता दर्शाती हैं। वर्तमान दौर में जबकि युवाओं के लिए परिवार की अवधारणा पूरी तरह से बदल गई है, ये कविताएँ और भी महत्वपूर्ण हो उठती हैं। आज के युवा के लिए परिवार फेमिली में बदल गया है और फेमिली में होते हैं सिर्फ पति, पत्नी और बच्चे। घूमने जा रहे हैं तो फेमिली के साथ, होटल में खाना

सन-शार्इन इंस्टीट्यूट
ऑफ आईटी

RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स



RKCL Tally, DTP
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र PGDCA

प्रवेश प्रारम्भ

पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा

मो. 9649813798, 9950084705

फेक्ट्री चौराहा, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

खाने जा रहे हैं तो फेमिली के साथ, मूवी देखने जा रहे हैं तो फेमिली के साथ। यहां माता, पिता, भाई, बहन के लिए कोई जगह नहीं है। माता-पिता घर पर सही-सलामत रहें। अब तो धीरे-धीरे घर भी छूटता जा रहा है। उन्हें वृद्धाश्रम में भर्ती करा दिया जाता है। इन त्रासदपूर्ण स्थितियों का मर्मस्पर्शी चित्रण 'विरासत का बंटवारा' और 'वृद्धाश्रम' कविता में आया है।

'धन दौलत सब बांट चुके तो माता पिता की बारी आई/ बेटे और बहुओं ने समझा कैसी जिम्मेदारी आई/ किसी ने आजू बाजू झाँका किसी ने ली अंगड़ाई/ माता पिता की जिम्मेदारी ना किसी को रास आई' (विरासत का बंटवारा) और ये पंक्तियाँ देखिए, 'संस्कारों की चिता सजा जज्बात जलाए जाते हैं/ नेक निगाहों की वाणी पर बाण चलाए जाते हैं (वृद्धाश्रम)। अब माता पिता के लिए वृद्धाश्रम ही तो आसरा है, 'बेरुख बंदिश हर पल देती मुरझाई साँसों को गम/ तब उठते हैं वृद्धजन के पग जाने को वृद्धाश्रम'।

एक और कविता है, जो अलग से रेखांकित करने योग्य है। यह है 'झण्डा ले लो बाबूजी'। इसे संग्रह की सबसे सशक्त कविता कह सकते हैं। देश भक्ति की भावना से लबरेज यह कविता अंत में आते-आते बहुत तीखा कटाक्ष कर जाती है। कविता किसी कथागीत की तरह आगे बढ़ती है। झण्डा बेचने वाला लड़का जब दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है तो झण्डा स्वयं को बेचने के लिए आगे आता है, 'कटे पड़े इन हाथों ने भी झंडे को फिर से फहराया/ नन्हें बच्चे की खातिर अबके झण्डा खुद चिल्लाया/ झण्डा ले लो बाबूजी एक झण्डा ले लो बाबूजी/ मैं हूँ आजादी का झण्डा फिर भी खुद को बेच रहा हूँ/ लोग देश को बेच रहे हैं मैं तो खुद को बेच रहा हूँ'।

सभी कविताओं में लय का इतना अच्छी तरह से निर्वहन किया गया है कि कोई भी इन्हें गुनगुना सकता है। जज्बातों के इस गुलदस्ते से जो संवेदनाओं की खुशबू उठ रही है वह बहुत दूर तक जाएगी। पाठक जरूर इन कविताओं का हृदय से स्वागत करेंगे। इस खूबसूरत संग्रह के लिए प्रमोद जी सनाढ्य को ढेर सारी बधाई।



माधव नागदा

वरिष्ठ कहानीकार व साहित्यकार

लालमादड़ी (नाथद्वारा)

मो. 9829588494



राजसमन्द के पर्यटन स्थल

राजसमन्द शहर के साथ आस पास के ग्रामीण क्षेत्र में धार्मिक लिहाज से तीर्थ स्थलों की संगम स्थली है। वैष्णव, शाक्त, शैव और जैन मनीषा की तपोभूमि अपने दर्शन और दृश्य को लेकर धार्मिक पर्यटन में रुचि रखने वालों के लिये रुचि व आकर्षण का केन्द्र हैं।



अणुव्रत विश्व भारती

राजसमन्द की अरावली उपत्यकाओं के मध्य राजसमन्द झील के किनारे सुरम्य वातावरण के मध्य स्थित है। तेरापंथ धर्म संघ के प्रतिनिधि अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी द्वारा संकल्पित अणुव्रत दर्शन के आचार व आचरण की प्रेरणादायी स्थली अणुव्रत विश्व भारती।

लघु संकल्पों से व्यक्ति निर्माण की चेतना व मानस परिवर्तन के सूक्ष्म प्रकल्पों को व्यावहारिक धरातल पर उतार लाने के प्रयोजन मूलक शिक्षण की अधिगम स्थली है अणुव्रत विश्व भारती। सन् 1982 में अणुव्रत साधक श्री मोहनभाई जैन द्वारा

संस्थापित यह केन्द्र आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बाल संस्कारों व शान्ति निलयम् के रूप में शान्ति व अहिंसा प्रशिक्षण, मानवीय मूल्यों के व्यावहारिक शिक्षण, क्रियाधारित शिक्षा व वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के एक डिफरेंट स्वरूप की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध बाल शिक्षण केन्द्र है।

अपने विविध बालोदय प्रोजेक्ट्स और बालोदय दीर्घाओं, बाल संसद, जीवन विज्ञान प्रशिक्षण व एजुकेनल ट्यूरिज्म के लिए जाने जा रहे इह केन्द्र से बाल शिक्षण में नवाचारों की पर्याप्त संभावनाएं हैं। अतः एवं दर्शनीय व रमणीय स्थली है।

देलवाड़ा के जैन मन्दिर:



उदयपुर से नाथद्वारा आते हुए राष्ट्रीय राज्य मार्ग संख्या आठ से सम्पर्क सड़क पर स्थित है देलवाड़ा। यहां जैन मन्दिरों की आकर्षक शृंखला है। उत्कृष्ट जैन कला का वस्तु शिल्प देलवाड़ा (देव कुल

पाटन) में स्थित जिन मन्दिरों की याद दिला देते हैं। यहां भगवान् आदिनाथ का प्रस्तर मूर्तिशिल्प दर्शनीय है।

अंधेरी ओरी, केलवा

राजसमन्द से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या आठ पर लगभग पंद्रह सोलह



किलोमीटर की दूरी पर केलवा कस्बे में स्थित 'अंधेरी ओरी' तेरापंथ धर्म संघ की उद्गम स्थली है। जैन परम्परानुयायी आचार्य

भीखण (आचार्य भिक्षु) ने वि०सं० 1817 में यहां चंद्र प्रभु के मन्दिर में नितान्त अंधेरी गुफा सम स्थली में तपस्या कर तेरापंथ धर्मसंघ का प्रवर्तन किया था। जैन मतावलंबियों की धार्मिक आध्यात्मिक आस्थाओं के केन्द्र अंधेरी ओरी विशाल तेरापंथ धर्मसंघ के लिये अनुभूति उत्प्रेरण का केन्द्र है।

तुलसी साधना शिखर



तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य भारमल्ल जी की साधना स्थली तुलसी साधना शिखर राजसमन्द झील के

किनारे अरावली पहाड़ियों के मध्य स्थित सुन्दर दर्शनीय स्थल है। यह योग साधना का प्रखर केन्द्र है।

दयालशाह का किला:

तुलसी साधना शिखर से सर्किट हाउस के रास्ते पर सड़क मार्ग पर सन् 1676 ई० में निर्मित दयालशाह का किला वस्तुतः एक जैन तीर्थ है। यहां आदीश्वर की चतुर्मुख पद्मासन में विराजित श्वेत प्रतिमा दर्शनीय है।



मेवाड़

के राणा राजसिंह जी के मंत्री दयालशाह द्वारा निर्मित यह किला और मन्दिर अत्यधिक विशाल था जिसे मुगलकाल में ध्वस्त कर दिया गया। इस स्थल तक मन्दिर के अग्रभाग से लगभग 300 सीढ़ियों की चढ़ाई से कांकरोली-राजनगर का विहंगम दृश्य मोहक है।

संबोधि उपवन:

राजसमन्द से राष्ट्रीय राजमार्ग आठ पर जयपुर

की ओर लगभग पच्चीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है संबोधि उपवन। अरावली की पर्वत शृंखलाओं के मध्य प्राकृतिक पर्यावरण के वर्तुल में स्थित यह आध्यात्मिक साधना की पवित्र स्थली है। प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान के प्रायोगिक अभ्यास व अणुव्रत दर्शन के सूक्ष्म चिन्तन पर संत समागम के मध्य संचालित होने वाले संवाद की यह तपोस्थली दर्शनीय है।



प्रस्तोता:

डॉ. राकेश तैलंग

शिक्षाविद्, राजसमंद



राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

गहराई से सोचो, आपकी जिंदगी का कोच कौन है ?

अनीता अल्वारेज,

अमेरिका की एक पेशेवर तैराक हैं, जो वर्ल्ड चैंपियनशिप के दौरान परफॉर्म करने के लिए स्विमिंग पूल में जैसे ही छलांग लगाई, वो छलांग लगाते ही पानी के अंदर बेहोश हो गई। जहां पूरी भीड़ सिर्फ जीत और हार के बारे में सोच रही थी, वहीं उसकी कोच एंड्रिया ने जब देखा कि अनीता एक नियत समय से ज्यादा देर तक पानी के अंदर है।

एंड्रिया पलभर के लिए सब कुछ भूल गई कि वर्ल्ड चैंपियनशिप प्रतियोगिता चल रही है। एक पल भी व्यर्थ ना करते हुए एंड्रिया चलती प्रतियोगिता के बीच में ही स्विमिंग पुल में छलांग लगा दी। वहां मौजूद हजारों लोग कुछ समझ पाते तब तक एंड्रिया पानी के अंदर अनीता के पास थी। एंड्रिया ने देखा कि अनीता स्विमिंग पुल में पानी के अंदर बेहोश पड़ी है।

ऐसी हालत में ना हाथ पैर चला सकती ना मदद मांग सकती। एंड्रिया ने अनीता को जैसे बाहर निकाला मौजूद हजारों लोग सन्न रह गए। एंड्रिया ने अनीता को तो बचा लिया, लेकिन हम सबकी जिंदगी में बहुत बड़ा सवाल छोड़ गई।

इस दुनियां में ना जाने कितने लोग हम सबकी जिंदगी से जुड़े हैं, कितनों से रोज मिलते भी होंगे। जो इंसान हर किसी से अपने मन की बात नहीं कह पाता कि असल जिंदगी में वह भी कहीं डूब रहा है, वह भी किसी तकलीफ से गुजर रहा है, वह भी किसी बात को लेकर जिंदगी से परेशान हो रहा है, लेकिन बता नहीं पा रहा है।

जब इंसान किसी को अपने मन की व्यथा, अपनी परेशानी नहीं बता पाता तो मानसिक तनाव इतना बढ़ जाता है कि वह खुद को पूरी दुनियां से अलग कर लेता है। सबकी नजरों से दूर एकांत में खुद को चारदीवारी में कैद कर लेता है। ये वक्त ऐसा होता है कि तब इंसान डूब रहा होता है, उसका मोह खत्म हो चुका होता है, ना किसी से बातचीत, ना

किसी से मिलना जुलना, ये स्थिति इंसान के लिए सबसे खतरनाक होती है। जब इंसान अपने डूबने के दौर से गुजर रहा होता है, तब बाक़ी सब दर्शकों की भांति अपनी जिंदगी में व्यस्त होते हैं, किसी को ख्याल ना होता

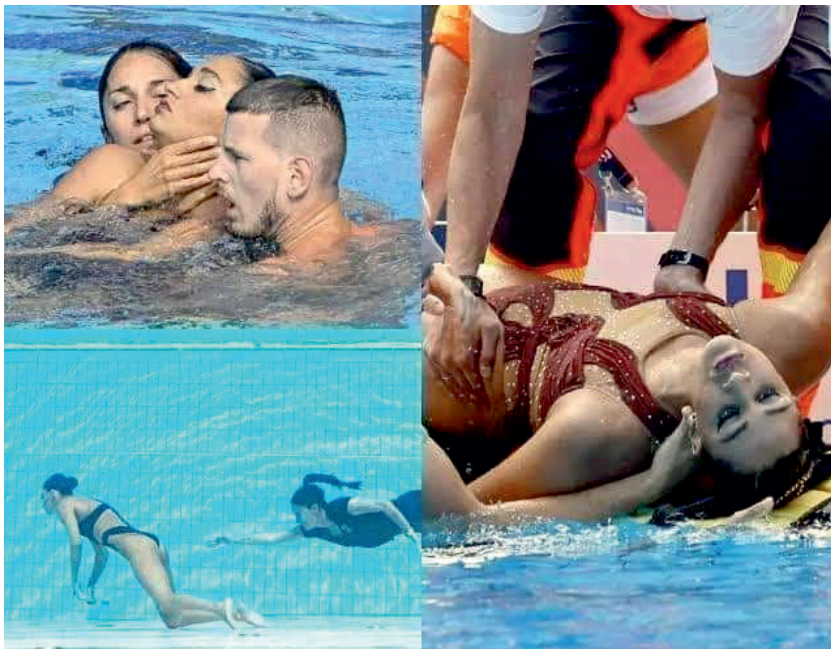
कि एक इंसान किसी बड़ी परेशानी में है। अगर इंसान कुछ दिन के लिए गायब हो जाए, तो पहले तो लोगों को ख्याल नहीं आएगा। अगर कुछ को आ भी जाए तो लोग यही सोचेंगे, पहले कितनी बात होती थी, अब वो बदल गया है या फिर उसे घमंड हो गया है या अब तो बड़ा आदमी बन गया है। इसलिए बात नहीं करता, जब वो बात नहीं करता तो हम कि यूं करें। या फिर ये सोच लेते हैं कि अब दिखाई ना देता तो वो अपनी जिंदगी में मस्त है,

इसलिए नहीं दिखाई देता।

अनीता पेशेवर तैराक होते हुए डूब सकती है, तो कोई भी अपनी जिंदगी में बुरे दौर से गुजर सकता है, ये समझना जरूरी है, लेकिन उन लोगों से हट कर कोई एक इंसान ऐसा भी होगा जो आपकी मनोस्थिति तुरंत भांप लेगा, उसे बिना कुछ बताए सब पता चल जाएगा, आपकी जिंदगी के हर पहलू पर हमेशा नज़र रखेगा, थोड़ा सा भी परेशान हुए वो आपकी परेशानी आकर पूछने लगेगा, आपके बेहवियर को पहचान लेगा, आपको हौसला देगा, आपको सकारात्मक बनाएगा और एंड्रिया की तरह कोच बनकर आपकी जिंदगी को बचा लेगा, हम सबको ऐसे कोच की ज़रूरत पड़ती है। ऐसा कोच कोई भी हो सकता है, आपका भाई, बहन, माँ, पापा, आपका कोई दोस्त, आपका कोई हितैषी, आपका कोई रिश्तेदार, कोई भी, जो बिना बताए आपके भावों को पढ़ ले और तुरंत एक्शन लें।

गहराई से सोचो आपकी जिंदगी का कोच कौन है ?

साभार



पिता

पिता, वटवृक्ष की छाया है,
हर गम, दुःख, परेशानी को,
जिसने दूर भगाया है,
सुख चेन की जड़ों को,
अपनेपन से जिसने फैलाया है,
पिता, वटवृक्ष की छाया है,
तरह तरह की मिट्टी से,
मिश्रण रूपी पोषक तत्वों को,
आभरण में जिसने मिलाया है,
सींचकर संस्कारों से,
जिसने इसे बढ़ाया है,
पिता, वटवृक्ष की छाया है,
सहनशीलता, ईमानदारी, धैर्य का,
जिसने खाद बीज उपजाया है,
अनेक उतार चढ़ाव खुद सहकर,
जिसने ठहराव इसमें लाया है,
पिता, वटवृक्ष की छाया है,
घनी जटाएँ साहस रूपी,
जिसने आडम्बर बिछाया है,
कोमल पत्तियों रूपी निर्मल मन,
जिसने खुली किताब की तरह सजाया है,
पिता, वटवृक्ष की छाया है।



पूजल दशरथ विजयवर्गीय

राजसमंद, राजस्थान

आदत

हम
तलाशते रहे हैं भीख
हर कहीं,
लिए अपने-अपने कटोरे
भटकने के आदी हो गए हैं जहाँ-तहाँ
जो कुछ चढ़ जाए भेंट भिक्षापात्र की
ग्रहण कर लेते हैं स्वेच्छा से
शिष्ट-उच्छिष्ट सब कुछ
आदर और कृतज्ञता भाव दर्शा कर,
हमें चाहिए
भीख
केवल भीख,
और भीख में हमें सब कुछ चाहिए
जो चापलुसी और बेशमी से मुफ्त में
मिल जाए,
पद, मद और कद हो, दर्जा हो, जमीन-
जायदाद हो या फिर
लोकप्रियता का कोई न कोई तेज बजने
वाला झुनझुना
चाहे इसके लिए हमें
क्यों न रचना ही पड़े कोई सा स्वाँग
नंगे-भूखे होने का,
हमें अच्छी तरह पता है कि
श्वानों की तरह पूँछ हिलाते रहने मात्र से
अनुभवी लोग भ्रमित हो जाते हैं
हमारी वफादारी के कायल हो जाते हैं,
उन्हें भी तो आखिर
चाहिए होती है मूर्ख और भौन्दू भीड़
अंधानुचरों की रेवड़ें
जो करती रहीं हर पल जयगान उनका
जैसा कि वे भी करते रहे हैं अपने
आकाओं का
इसीलिए पक्का भरोसा है उनका
तमाम किस्मों के पालतुओं और

फालतुओं पर,
हम सब भी तो जानते हैं
अपनी असलियत, औकात, अपने बीज
की ताकत
और पुरुषार्थहीनता की जन्मजात
कमजोरी,
हमें सिखाया भी तो यही गया है
औरों के टुकड़ों पर पलना
और मुफ्त में मौज उड़ाना।
इसके सिवा हमारी जिन्दगी का
कोई लक्ष्य नहीं,
हम सारे के सारे हैं एक-दूसरे के लिए
हर तरफ भरमार है
अपने जैसे ही समानधर्मा लोगों की
कोई बड़ा वाला है
और कोई छोटा वाला,
भिखारी सारे ही हैं
कोई घोषित
कोई अघोषित रहकर
पूरी की पूरी धींगामस्ती के साथ
जमकर उड़ा रहे हैं पराया माल
जैसे कि उनके बाप-दादा रख गए हों
इनकी बपौती मानकर।



डॉ. दीपक आचार्य

महालक्ष्मी चौक, बांसवाड़ा
9413306077



सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी



सरकारी नौकरी के लिए
आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स



राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498 - 13798, 79767 - 52935

जयवर्द्धन : जून, 2023, वर्ष 5, अंक 11

कोई नया नाम यहीं सभी की
जुबां पर नहीं चढ़ जाता है
कोने में दबे होठों की
आवाज बनना पड़ता है...

किसी की अनसुनी कहानी है जयवर्द्धन,
हर गरीब वंचित की जुबानी है जयवर्द्धन,
कहीं ढाणी तक सड़क,
तो कहीं गांव का पानी है जयवर्द्धन।
हर विषमता के खिलाफ
युवाओं की जवानी है जयवर्द्धन।
नौ चोकी की पाल हैं,
तो राजसमन्द झील का पानी है जयवर्द्धन।
मीरा के घुंघरू की खनक
तो महाराणा के शौर्य की कहानी है जयवर्द्धन
महाराणा के शौर्य की कहानी है जयवर्द्धन।

Jaivardhan News

साहित्यकार स्व. दुर्गाशंकर 'मधु' को श्रद्धांजलि के साथ मासिक काव्य गोष्ठी का हुआ समापन

राजस्थान साहित्यकार परिषद्, कांकरोली की मासिक काव्य गोष्ठी ईश्वर चंद्र शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। गोष्ठी का शुभारंभ कहानीकार माधव नागदा द्वारा एक साहित्यकार साथी के जीवन की उठापटक और विडम्बनाओं पर केंद्रित कहानी 'जख्मी की डायरी' से हुआ। राजकुमार खटीक ने समय के साथ बढ़ती जा रही दुष्प्रवृत्तियों पर प्रहार करती कविता, 'विश्वास की हत्या' का पठन किया। युवा साहित्यकार अखिल नागदा ने महापुरुषों के विचारों के विपरीत उनकी प्रतिमाओं पर जुटी शोर मचाती भीड़ की मानसिकता पर व्यंग्य करती अपनी कविता 'चौराहे पर महापुरुष' इन शब्दों के साथ प्रस्तुत की।

'मूर्तियाँ शोर में / कुछ नहीं कह पाएंगी/ सच को जानना है तो/ आपको जाना होगा / उनके असली पते पर/ किसी धूल खाती लाइब्रेरी में/ किताबों के बीच, किताबों में।

भैंवर 'बॉस' ने अपने चिरपरिचित अंदाज में अपनी रचना 'आवारा मन' सुनाई। वरिष्ठ साहित्यकार क्रमर मेवाड़ी ने साहित्य में लघु पत्रिकाओं की भूमिका पर बात करते हुए 'आर्यकल्प' पत्रिका में प्रकाशित 'संबोधन' पत्रिका के बारे में अपनी बात कहते संपादकीय का वाचन



किया। नरेंद्र निर्मल ने पारिवारिक संबंधों में व्याप्त स्वार्थपरता पर आधारित कहानी, 'सराय' का पठन किया। अफ़ज़ल खां 'अफ़ज़ल ने कविता, 'मैं आज भी धरती के अंधेरे से गुजर रहा हूँ' सुनाई। प्रमोद सनाढ्य ने गीत, 'जीवन की आपाधापी में' और नगेन्द्र मेहता 'भव्य' दोहे सुनाए। गोष्ठी के सूत्रधार किशन कबीरा ने गोष्ठी में प्रस्तुत रचनाओं पर चर्चा एवं समीक्षा करते हुए अपनी कविता 'स्वर्ण कलश की खोज में' कविता का पाठ किया। इसके साथ ही गोष्ठी अध्यक्ष ईश्वर चंद्र शर्मा के आशीर्वचन के साथ प्रथम सत्र पूर्ण हुआ।

गोष्ठी के द्वितीय सत्र में दिवंगत साहित्यकार दुर्गा शंकर 'मधु' के साहित्यक जीवन एवं उनके सरल व्यक्तित्व पर चर्चा हुई और उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट मौन रख कर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

**सन-शाइन इंस्टीट्यूट
ऑफ आईटी**

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स



**RKCL Tally, DTP,
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र PGDCA**

प्रवेश प्रारम्भ

पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा

मो. 9649813798, 9950084705

फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

रोशनी छीन के घर घर से चिरागों की (अजब मंज़र)



कुलदील सलिल जी की बात से शुरुआत करते हैं और आखिर में उनकी लाजवाब ग़ज़ल भी पढ़ते हैं-

सितम को जड़ से जो काटे उसे शमशीर कहते हैं
जो पत्थर को भी पिघला से उसे तासीर कहते हैं।
अमीरों का मुकद्दर तो बना होता है पहले ही
गरीबों की जो बन जाए उसे तकदीर कहते हैं।

गरीबी और भूख में जिस देश का स्थान खेदजनक हो उसकी राजधानी और सचिवालय को जगमगाहट क्या वास्तविकता पर पर्दा डाल सकती है। क्या सब कुछ सबसे पहले उनको चाहिए। जिनका कहने को मकसद देश सेवा जनता की सेवा और समाज कल्याण करना समझा जाता है। जनता मालिक फुटपाथ पर और सांसद सेवक होकर शानदार महल में मौज मस्ती करें, ये लोकतंत्र नहीं कहला सकता है। कुछ भी और कहने से पहले इक सीधा सा गणित है, 1200 करोड़ खर्च कर नया शानदार भव्य संसद परिसर बनाने का अर्थ है। देश की जनता 140 करोड़ संख्या है, तो एक एक व्यक्ति 81/2 रूपए का खर्च होता है चिड़ी चोंच भर ले गई, उनको लगता है, लेकिन इसका अर्थ है जिनकी रगों में

लहू बचा ही नहीं उनसे कितना और निचोड़ोगे। आपको चकाचौंध रोशनी मिले, मगर गरीब का दिया बुझा कर कदापि नहीं होना चाहिए। सोचना चाहिए कितना महत्वपूर्ण था, ये निर्माण करना सोचना होगा। इस संसद में कितने अपराधी, कितने धनबल के कारण और कितने इक तरह से किसी दल की अनुकंपा से बैठे मिलेंगे। संसद की पवित्रता उसकी मर्यादा की चिंता छोड़ आधुनिक साधन सुविधाओं की बात करना लगता है, जैसे कोई कारोबारी व्यापारी चर्चा को पांचतारा होटल का माहौल चाहिए।

वैसे भी गरीबी महंगाई की बात करता कोई नहीं चाहता राजनेता से सोशल मीडिया टीवी चैनल तक सभी को हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। प्राथमिकता बदल गई हैं, जनता को दिखावे की योजनाएं जो कभी कामयाब नहीं होती और अधिकारी व्यापारी वर्ग, राजनेताओं की हर ज़रूरत पूरी होती है। अगर खजाना लबालब भरा था, तो इतना पैसा देश में सबको शिक्षा स्वास्थ्य सेवाएं, बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करवाने पर और भूख बेरोजगारी से छुटकारा पाने पर निवेश किया जाता। पहले देश की जनता में सभी को शानदार आवास और जीने को तमाम सुविधाएं हासिल करवाई जाती, तब संसद भवन की बारी आती तो लोक

का कल्याण पहले होना चाहिए लगता सही है।

ये कीमत चुकाई है अथवा चुकानी होगी, सभी देशवासियों को अगर ये कर्ज ले कर घी पियो की बात है। मुझे नहीं पता जो अपनी हसरतें नाम शोहरत और शाहंशाही रहन सहन सैर सपाटे, अन्य कितने भव्य आयोजन, नवाबी ढंग से शान बढ़ाने को करता है, उसको देश की आधी से अधिक आबादी की बदहाली पर रत्तीभर भी एहसास है मानवीय संवेदना है। क्यों नहीं बड़े नेता, अभिनेता जो करोड़ों रूपए बिना किसी शारीरिक मेहनत केवल टीवी पर विज्ञापन देने का धंधा कर बनाते हैं, इसको महान घोषित करें, जबकि वो फिल्म वाले, टीवी वाले करते क्या हैं पैसा कमाने को दर्शकों को फिल्म टीवी सीरियल से समाचार तक की आड़ में गंदगी परोसना, गुमराह करना और हिंसा को बढ़ावा देना।

जी यही उपलब्धि है पिछले तीस साल से इन सभी ने भगवान बना लिया है पैसे को और शैतान को इतना चमकदार किरदार बनाकर खड़ा कर दिया है कि अधिकांश हम लोग उसे स्वीकार ही नहीं पसंद करने लगे हैं। इस तथाकथित अभिजात्य वर्ग को देश समाज से जनता से ज़रा भी सरोकार नहीं है। आपसी भाईचारा है गुणगान करते हैं, बदले में मनचाहा वरदान पाते हैं, साफ शब्दों में ईमान बेच कर जागीर बनाना आसान है, उनकी दुनिया में और सही मार्ग पर चलकर जीने की चाहत इक आफत की तरह है। उनको कितना चाहिए, कोई हिसाब नहीं देश की आजादी और संविधान को कुछ लोगों ने अपना बंधक बना लिया है और आम जनता को बेबस और लाचार बनाकर किसी भिखारी जैसी हालत कर दी है, जबकि शोर इनके तमाशों का है जनता की आहों की आहट भी कहीं किसी को सुनाई नहीं देती है। सरकार को इतना तो बताना चाहिए कि इस पर किया खर्च क्या है, कैसे हुआ है, कितना जमापूंजी से कितना क्या क्या बेचकर, कितना गिरवी रखकर विरासत को और कितना कर्ज या उधार कितने सालों तक कौन चुकाएगा।

ये विकास है देशभक्ति है, तो मुझे ऐसा मंजूर नहीं। कुलदीप सलिल ही नहीं दुष्यंत कुमार जी की पहली गज़ल यही है- 'कहां तो तय

था चिरागां हर एक घर के लिए, कहां चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए'।

आखिर में कुलदीप सलिल जी की गज़ल बहुत कुछ कहती है-

इस कदर कोई बड़ा हो मुझे मंजूर नहीं
कोई बंदों में खुदा हो मुझे मंजूर नहीं।

रोशनी छीन के घर घर से चिरागों की अगर
चांद बस्ती में ऊगा हो मुझे मंजूर नहीं।

मुस्कुराते हुए कलियों को मसलते जाना
आपकी एक अदा हो मुझे मंजूर नहीं।

हूं मैं अगर आज कुछ तो हूं बदौलत उसकी
मेरे दुश्मन का बुरा हो मुझे मंजूर नहीं।

खूब तू खूब तेरा शहर है, ता-उम्र
एक ही आबो-हवा हो मुझे मंजूर नहीं।

सीख लें दोस्त भी कुछ अपने तज़रबे से कभी
काम ये सिर्फ मेरा हो, मुझे मंजूर नहीं।

हो चिरागां तेरे घर में मुझे मंजूर 'सलिल'
गुल कहीं और दिया हो मुझे मंजूर नहीं।



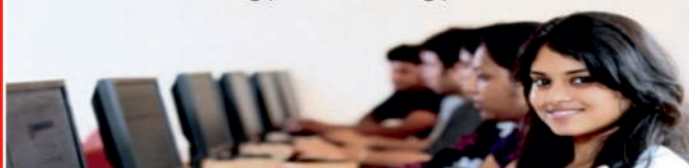
डॉ. लोक सेंतिया

वरिष्ठ व्यंग्यकार
फतेहाबाद, हरियाणा

**सन-शार्इन इंस्टीट्यूट
ऑफ आईटी**

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स



**RKCL Tally, DTP,
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र PGDCA**

प्रवेश प्रारम्भ

पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा

मो. 9649813798, 9950084705

फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

शक्ति स्पोर्ट्स



सभी प्रकार
की खेलकूद सामग्री
मिलने का
राजसमंद में एकमात्र
विश्वसनीय स्थान

स्पोर्ट्स व GYM
आइटम होलसेल
रेट पर उपलब्ध है।

TLM सामग्री, दरी पट्टी,
भोजन पट्टी, अग्निशमन यंत्र,
लेक्टोमीटर, ट्रॉफी मोमेंटो, टी-शर्ट, लोवर,
विज्ञान प्रयोगशाला,
भूगोल प्रेक्टिकल सामग्री, पुस्तकालय की उपयोगी
पुस्तकों सहित सभी प्रकार के
सरकारी स्कूल की सामग्री उपलब्ध

शॉप नं. 10-11, शास्त्री मार्केट, कांकरोली जिला-राजसमंद
फोन नं. 02952-225137, 9414473275

सन-शार्इन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स



RKCL Tally, DTP,
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र PGDCA

प्रवेश प्रारम्भ

पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा

मो. 9649813798, 9950084705

फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696



राजसमंद, राजस्थान के साथ देश- दुनिया
की खबरों से अपडेट रहने के लिए
फोलो और सब्सक्राइब करें



सबक

संसार में जन्म लेने के लिए
मां के गर्भ में 9 महीने रुक सकते हैं,
चलने के लिए 2 वर्ष,
स्कूल में प्रवेश के लिए 3 वर्ष,
मतदान के लिए 18 वर्ष,
नौकरी के लिए 22 वर्ष,
शादी के लिए 25-30 वर्ष,

इस तरह अनेक मौकों के लिए हम इंतजार करते हैं, लेकिन
गाड़ी ओवरटेक करते समय 30 सेकंड भी नहीं रुक सकते ?

फिर एक्सीडेंट होने के बाद जिन्दा रहे, तो एक्सीडेंट निपटाने के लिए
कई घंटे, अस्पताल में कई दिन, महीने या साल निकाल देते हैं।

कुछ सेकंड की गड़बड़ी कितना **भयंकर** परिणाम ला सकती है।
जाने वाले चले जाते हैं, पीछे वालो का क्या।
इस पर विचार किया, कभी किया नहीं।
फिर हर बार की तरह, नियति को दोष।

इसलिए सही रफ्तार में सही दिशा में वाहन संभल कर चलाएं सुरक्षित
पहुंचें। आपका अपना परिवार आपका घर पर इंतजार कर रहा है।

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

website : liverajsamand.com

सामाजिक कार्यों के लिए अमर हुए स्व. वागरेचाजी

श्री द्वारकाधीश प्रभु की पावन नगरी कांकरोली के पड़ोस में बनास नदी के किनारे बसे एक छोटे से गांव नमाण्णा में एक प्रतिष्ठित परिवार में दादा स्व. खेमराजजी व दादी स्व. मोहनबाई के सुपुत्र स्व. उदयलाल जी वागरेचा व स्व. माता श्री सुन्दर बाई की कोख से 4 जुलाई 1942 को अपने ननिहाल पहुंचा, जिला भीलवाड़ा में स्व. भंवरलाल जी वागरेचा का जन्म हुआ। स्व. उदयलाल जी की सबसे बड़ी सन्तान पुत्र के रूप में पाकर पूरा परिवार खुशियों से झूम उठा दादा श्री स्व. खेमराज जी व दादीजी स्व. मोहनबाई की खुशियों का ठिकाना नहीं रहा। जब स्व. भंवरलाल जी 7 माह के थे तभी दादाजी खेमराज जी उन्हें घोड़े पर उठे अपने साथ बिठा कर कांकरोली ले आये और यही रहने का मानस बना। स्व. भंवरलाल जी लालन-पालन करने लगे। पिता श्री स्व. उदयलाल जी ने भी यहीं कांकरोली में अपने कपड़े का व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया। और धीरे-धीरे स्व. भंवरलाल जी की शिक्षा दिक्षा प्रारम्भ हो गई। वे बचपन से ही कुषाघ्न बुद्धि के प्रतिभावान विद्यार्थी बन कर शिक्षा ग्रहण करने लगे। वे संवेदनशील और सहनशीलता के प्रतीक थे। बचपन से ही समाज सेवा में अग्रसर रहकर उत्कृष्ट कार्य करने में उन्हें आनन्द का आभास होता था। पर पारिवारिक कारणों से गैरजुएषन से पहले ही उन्हें व्यवसाय संभालना पड़ा जिसका उन्हें बड़ा अफसोस हुआ पर जिम्मेदारियां समझ वे व्यवसाय में संलग्न हो गये।



स्व. भंवरलाल जी वागरेचा के पांच भाई ओर एक बहन भी थी। जिनकी शिक्षा दिक्षा की समस्त जिम्मेदारी आपने पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाई। आपने अपने दो भाई डॉ. श्री सुखलाल व स्व. डॉ. सुरेन्द्र कुमार को डॉ. बनाने के लिये अथक परिश्रम और मेहनत की। एक भाई श्री सागर को चार्टेड अकाउन्टेन्ट(सी.ए.) तो एक भाई आनन्द को इन्जीनियर बनाया। तो एक भाई विमल को आपने जी.एन. इन्जिनियर बनाया। बहन अनिता का भी उच्च शिक्षा दिला जयपुर के प्रतिष्ठित दुग्गड परिवार में श्री कुषल जी के साथ विवाह रचा विदा किया।

समय अनुसार आपका विवाह पुठोल गांव के नामी गिरामी पोखरना परिवार में मधु देवी के साथ समपन्न हुआ। आपके दो पुत्र श्री रजनीष व श्री कमलेश व एक पुत्री विष्मि जिसका विवाह धानीन निवासी हाल मुम्बई श्री अशोक जी के साथ हुआ। उनके दोनों ही पुत्र व दामाद अपने-अपने व्यवसाय को सफलता पूर्वक संभाले हुए हैं व समाज में गतिशील हैं।

उन्हें बचपन से ही साहित्य के प्रति लगाव रहा पढ़ने लिखने के शौक के कारण ही आपने अपनी संवेदनाओं को कविता लेख, आदि-आदि विधाओं के रूप में उजागर किया। उनके मन पर भगवान महावीर व ओषो (रजनीष) की गहरी छाप थी जिनकी चर्चायें वे अक्सर अपने परिवार व सामाजिक रूप से सक्रिय लोगों में किया करते थे। स्थानीय



राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए



YouTube

Channel

Jaivardhan News

कवि व कलमकारों से आपके घनिष्ठ संबंध थे। वे सहित्यकारों को उचित मान सम्मान और आदर दिया करते थे। उनकी आवाभगत कर उनके साथ मंत्रणा किया करते थे। हर शरद पुर्णिमा पर वे स्थानीय कवियों को बुलाकर तुलसी साधना षिखर पर एक काव्यगोष्ठी का आयोजन किया करते थे और स्नेह के साथ सभी के साथ मिलकर खीर का रसास्वादन किया करते थे।

वे समाज सेवा में भी अग्रणी थे। वे बरसों तक कांकरोली के नगर विकास समिति के अध्यक्ष पद पर रहे। और कई समाज सेवा के कार्य उन्होंने किये। कांकरोली के वर्तमान बस स्टेण्ड, सब्जी मण्डी, पार्किंग एवं राठासेन माताजी से विट्ठल विलास बाग तक चौड़ी सड़क अपने सहयोगियों की मदद से बनवाई। गांधी पार्क की वापसी आदि-आदि अनेक कार्यों में उनका सहयोग भुलाया नहीं जा सकता। वे कमला नेहरू अस्पताल के निर्माण समिति के भी अध्यक्ष रहे और श्री ईश्वर जी सनाढ्य के सहयोगी बन कार्य किया। तेरापंथ के प्रज्ञा विहार भवन के ट्रस्टी रहते हुए आर्थिक सहयोग के साथ भवन निर्माण में पूरा-पूरा सहयोग किया। वे लम्बे समय तक तुलसी साधना षिखर के कार्यवाहक अध्यक्ष पद पर भी रहे। आचार्य श्री तुलसी के आशीर्वाद से ही उन्होंने तुलसी साधना षिखर के विकास में अपनी भागीदारी निभाई। वर्तमान 50 फीट रोड के निर्माण में भी आपने तात्कालिक सभापति श्री महेश जी पालीवाल को पूरा पूरा सहयोग प्रदान करते हुए खुद अपनी

जमीन जो सड़क में आ रही थी निःशुल्क पालिका को प्रदान करी। और इस रोड को बनाने में सहयोग किया। इसके अलावा भी आप कई सामाजिक संगठनों एवं संस्थाओं से जुड़े रहे। आप राजनिति से भी जुड़े रहे कई तात्कालिक राजनेताओं से आपके मधुर संबंध थे कई संस्थाओं ने आपको अध्यक्ष, मंत्री, और संरक्षक जैसे पदों पर आमंत्रित कर सम्मान किया वे आधुनिक विचारधारा के प्रबल समर्थक थे। इसीलिये उन्होंने सदा अपने परिवार को समय के साथ चलने का मंत्र दिया और यही कारण है कि आज उनका पूरा परिवार हर क्षेत्र में उन्नति की ओर अग्रसर है।

फेंफडों की तकलीफ से वे तीन-चार महीनों तक बिमार रहे और अन्त में 17 मार्च 2020 को वे अपना भरा पूरा परिवार छोड़ इस दुनिया को अलविदा कह गये। ऐसे अनुपम समाज सेवी व्यक्तित्व को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफज़ल

वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली
मो. 98284-75288



बनो सच की ताकत जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..

अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से

अपडेट रहने के लिए



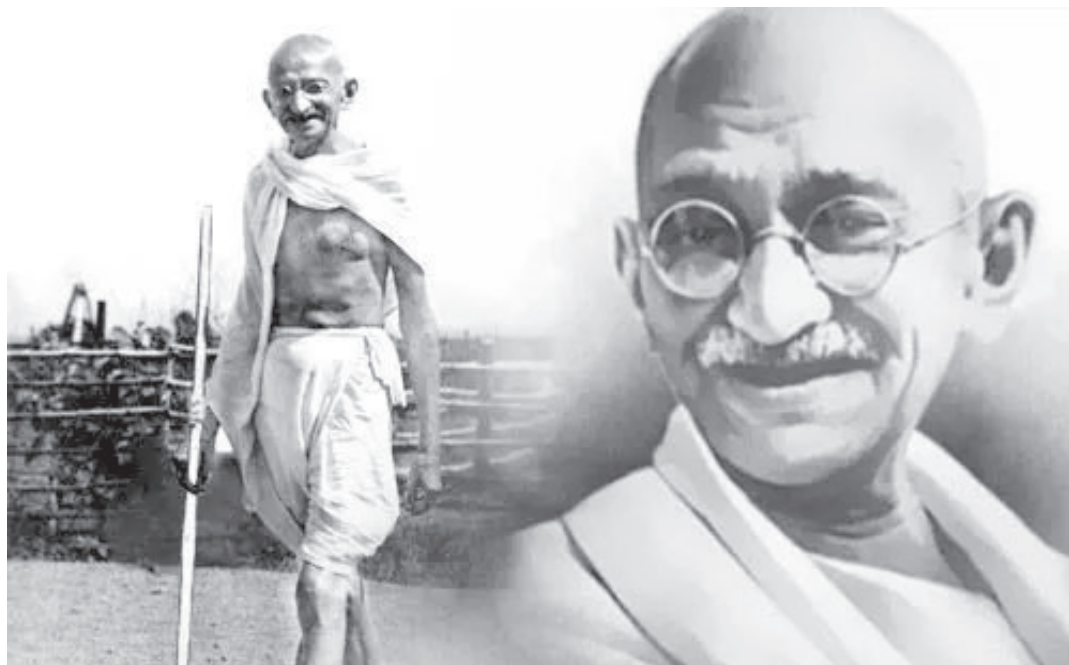
करें

 **YouTube**
Jaivardhan
News

हिंदुस्तान में

(गांधीजी की आत्मकथा)

कलकत्ता से मुंबई जाते हुए प्रयाग बीच में पड़ता था। वहां ट्रेन 45 मिनट रुकती थी। इस बीच मैंने आग शहर का एक चक्कर लगा आने की सोची। मुझे किसी अंग्रेज दवा बेचने वाले के यहाँ से दवा भी लेनी थी। दवाफरोश ऊंचता हुआ बाहर निकला। दवा देने में काफी देर लगा दी। मैं स्टेशन पहुंचा तो गाड़ी चलती दिखाई दी। स्टेशनमास्टर भला आदमी था। उसने मेरे लिए गाड़ी एक मिनट रोक दी थी, पर मुझे वापस आते न देख मेरा सामान उतरवा लेने की सावधानी उसने रखी।



मैं केलनर के होटल में ठहरा और वहीं से अपना काम शुरू करने का निश्चय किया। प्रयाग के 'पायोनियर' पत्र की ख्याति मैंने सुन रखी थी। वह जनता की आकांक्षाओं का विरोधी है, यह बात भी मुझे मालूम थी। मेरा खयाल है कि उस समय मि. चेजनी (छोटे) सम्पादक थे। मुझे तो सब पक्ष वालों से मिलकर सबको सहायता लेनी थी, अतः मि. जनी को मैंने मुलाकात के लिए हुई जी पत्र लिखा। ट्रेन छूट जाने की बात बताकर यह लिख दिया कि अगले ही दिन मुझे प्रयाग चले जाना है। उत्तर में उन्होंने मुझे तुरंत मिलने के लिए बुलाया। मुझे प्रसन्नता हुई। उन्होंने मेरी बात गौर से सुनी। कहा कि आप (मैं) कुछ लिखें तो मैं तुरंत उस पर टिप्पणी लिखूंगा। साथ ही यह भी कहा, 'लेकिन मैं आपसे यह नहीं कह सकता कि मैं आपकी सभी बातों का समर्थन करूंगा। उपनिवेशियों-आशा (दक्षिण अफ्रीका के गोरों) का दृष्टि बिंदु भी तो हमें समझना और देखना होगा।'

मैंने उत्तर दिया, 'आप इस प्रश्न का अध्ययन और चर्चा करेंगे इतना ही मेरे लिए काफी है। मैं शुद्ध न्याय के सिवा न कुछ मांगता हूँ, न कुछ चाहता हूँ।'

बाकी का दिन प्रयाग के भव्य त्रिवेणी संगम के दर्शन और अपने ऊपर से रखे काम के बारे में सोचने-विचारने में बिताया। इस

अनसोची मुलाकात ने मुझ पर नेटाल में हुए हमले का बीज बोया

बंबई में बिना रुके सीधा राजकोट गया और एक पुस्तिका लिखने की तैयारी में लग गया। उसे लिखने और छपाने में लगभग एक महीना लग गया। इसका मुख पृष्ठ हरा था, इससे बाद को वह 'हरी पोथी' के नाम से प्रसिद्ध हुई। उसमें दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों का चित्रण मैंने जान-बूझकर हलका रखा था। नेटाल में लिखी हुई दो पुस्तिकाओं में, जिनकी चर्चा पहले कर चुका हूँ, मैंने जैसी भाषा लिखी थी उससे यहां नरम भाषा से काम लिया। कारण यह कि मैं जानता था कि छोटा दुःख भी दूर से देखने पर बड़ा दिखाई देता है।

हरी पुस्तिका की दस हजार प्रतियां छपवाकर सारे हिंदुस्तान के अखबारों और सब दलों के प्रमुख पुरुषों के पास भेजीं। 'पायोनियर' में उस पर सबसे पहले लेख निकला। उसका सारांश विलायत गया और फिर इस सारांश का सारांश रायटर के द्वारा नेटाल गया। यह तार तो तीन सतर का था। नेटाल में हिंदुस्तानियों के साथ होने वाले व्यवहार का मैंने जो चित्र खींचा था उसका गा 'लघु संस्करण' था। वह मेरे शब्दों में न था उसका क्या असर हुआ इस पर पीछे विचार करूंगा धीरे-धीरे सब प्रमुख पत्रों में इस प्रश्न की विस्तृत चर्चा हुई।

डाक से भेजने के लिए इस पुस्तिका के पैकेट आदि बनवाना टेढ़ा और पैसा देकर कराए तो खर्चे का काम था। मैंने आसान उपाय ढूँढ निकाला। पास-पड़ोस के सब लड़कों को इकट्ठा किये और उनसे सबेरे के दो-तीन घंटों में जितना दे सकें उतना समय मांगा। लड़कों ने खुशी से इ सेवा कबूल कर ली। अपनी ओर से मैंने उन्हें अपने पास इकट्ठे काम में लाये हुए डाक के टिकट और आशीर्वाद देने की बात कहीं। लड़कों ने हँसते-खेलते मेरा काम पूरा कर दिया। निरे बच्चों क इस तरह स्वयं सेवक बनाने का मेरा यह पहला ही प्रयोग था। इन बालकों में से दो आज मेरे साथी हैं।

इसी बीच बंबई में पहली बार प्लेग का प्रकोप हुआ। चारों ओर घबराहट फैली हुई थी। राजकोट में भी प्लेग फैलने का डर था। मैंने सोचा कि स्वास्थ्य विभाग में काम कर सकता हूँ। मैंने लिखा कि अपनी सेवा राज्य को अर्पण करने के लिए तैयार हूँ। राज्य ने जो कमेटी बनाई उसमें मुझे देव ले लिया। पाखानों की सफाई पर मैंने जोर दिया और कमेटी ने किया कि गली-गली जाकर पाखानों की जांच की जाय गरीब लोगों ने अपने पाखानों की जांच करने देने में तनिक भी आनाकानी नहीं की। इतना ही नहीं, जो सुधार उन्हें बतलाये गए वे उन्होंने कर लिये। पर जब हम राजदरबार वालों, 'बड़े आदमियों' के घर जांचने निकले तो कितनी ही जगह तो हमें पाखाने देखने की इजाजत भी न मिलती थी। सुधार की तो बात ही क्या? हमारा सामान्य अनुभव यह रहा कि धनिक वर्ग के पाखाने अधिक गंदे थे। उनमें अंधेरा, बदबू और बेहद गंदगी थी। खुड्डियों पर कीड़े बजबजाते थे। उन्हें काम में लाना रोज जीते-जी नरक में प्रवेश करने जैसा था। जो सुधार हमने सुझाये वे बहुत ही साधारण थे मैला जमीन पर न गिरने देकर कूड़े में गिराये पानी को भी जमीन में जज्ब न होने देकर कूड़े में गिराने का उपाय किया जाय। खुड्डि और भंगी के आने की जगह के बीच में दो दीवार रखी जाती है वह तोड़ दी जाय, जिससे सारा पाखाना भंगी अच्छी तरह साफ कर सके। पाखाने कुछ बड़े हो जाय और उनमें हवा-रोशनी जा सके। बड़े आदमियों ने इन सुधारों को मानने में बड़े एतराज उठाये और अंत में पूरे नहीं किये।

कमेटी को भंगियों के मुहल्ले में जाना तो था ही कमेटी के सदस्यों में से केवल एक सदस्य मेरे साथ वहां जाने को तैयार हुए भंगियों की बस्ती में जाना और वह भी पाखाने की जांच कराने के लिए? पर मुझे तो भंगियों का मुहल्ला देखकर हर्षजनक आश्चर्य हुआ। भंगी-मुहल्ले में जाने का मेरे जीवन में तो यह पहला ही मौका

था। भंगी भाई-बहनों को हमें देखकर आश्चर्य हुआ। हमने उनके पाखाने देखने चाहे।

वे बोले: 'हमारे यहां पाखाने कहां? हमारे पाखाने तो जंगल में हैं। पाखाने तो आप बड़े आदमियों के यहां होते हैं।'

मैंने पूछा, 'तो अपने घर हमें देखने दोगे?'

'आइए न, भाईसाहब! जहां आपका जी चाहे जाइए। यही तो हमारे घर हैं।'

मैं अंदर गया और घर-आंगन दोनों की सफाई देखकर खुश हो गया। घर के भीतर सब लिपा- ता देखा, आंगन बुहारा झाड़ा और जो थोड़े से बर्तन भांडे थे, सब साफ और चमचमाते हुए।

इस मुहल्ले में बीमारी फैलने का डर मुझे नहीं दिखाई दिया।

एक पाखाने का जिक्र किये बिना नहीं रह सकता। हर घर में नाली तो थी ही उसमें पानी भी गिराया जाता और पेशाब भी किया जाता। अतः ऐसा कमरा शायद ही मिलता जिसमें बदबू न हो। पर एक घर में तो सोने के कमरे में मोरी और पाखाना दोनों देखे, और वह सारा मैला नाली की राह नीचे उतरता था। इस कोठरी में खड़ा रहना कठिन था घर का मालिक उसमें कैसे सो सकता था, इसका विचार पाठक ही करें।

कमेटी ने हवेली (वैष्णव मंदिर) का मुआइना भी किया। हवेली के मुखिया जी से गांधी- कुटुम्ब का प्रेम का सम्बन्ध था। मुखिया जी ने हवेली देखने देना और उसमें जितना सुधार हो सकता था उतना करा देना मंजूर किया। उन्होंने खुद वह हिस्सा कभी देखा न था। हवेली की रोज की जूठन और पत्तलें पिछवाड़े की दीवार के ऊपर से फेंक दी जाती थीं और वह हिस्सा चील- कौओं का अड्डा बन गया था। पाखाने तो गंदे थे ही मुखिया जी ने कितना सुधार किया यह मैं न देख सका। हवेली की गंदगी देखकर दुःख तो हुआ ही। यदि हवेली को हम पवित्र स्थान- देवस्थान समझें, तो वहां तो स्वास्थ्य नियमों का पूर्ण पालन होने की आशा रखी जानी चाहिए। स्मृतिकारों ने अंतर्बाह्य शौच पर काफी जोर दिया है यह बात उस समय भी मेरे ध्यान से बाहर न थी।

महात्मा गांधी
सत्य के प्रयोग अथवा
आत्मकथा के पाठ 25 से



सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी

राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स



CSC ACADEMY
Computer Course

सरकारी नौकरी के लिए
आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स



Rajasthan Knowledge Corporation Limited



RS-CIT

ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498 - 13798, 79767 - 52935

पुरानी फाइल

युवक परेशान हाल था। बाल कुछ-कुछ बेतरतीब माथे पर पसीने की बूँदें। सांस में हंफनी शायद काफी दूर से दौड़ता हुआ आया था। इसके बावजूद वह हरे रंग की एक फाइल को इस मजबूती से पकड़े हुए था मानो फाइल न होकर कोई बेशकीमती चीज हो।

कई युवक युवतियां वहां पहले से ही प्रतीक्षारत थे। वह भी एक किनारे खड़ा हो गया। उसने उड़ती नजर सब पर डाली और मन ही मन स्वयं को तौलने लगा।

अन्ततः उसका बुलावा आ ही गया। उसकी आँखों में चमक दौड़ गई। जेब से कंधा निकालकर बाल संवारे और चेम्बर में प्रविष्ट हो गया। सामने तीस पैंतीस वर्षीय अफसर था। आँखों पर चश्मा। चेहरे पर कुर्सीजन्य रौब।

युवक ने फाइल आगे की। फिर 'एक्सक्यूज मी, सर' कहकर कुर्सी पर बैठ गया। वह खुद को बहुत थका हुआ महसूस कर रहा था। 'हूँ..., क्या नाम है तुम्हारा?'

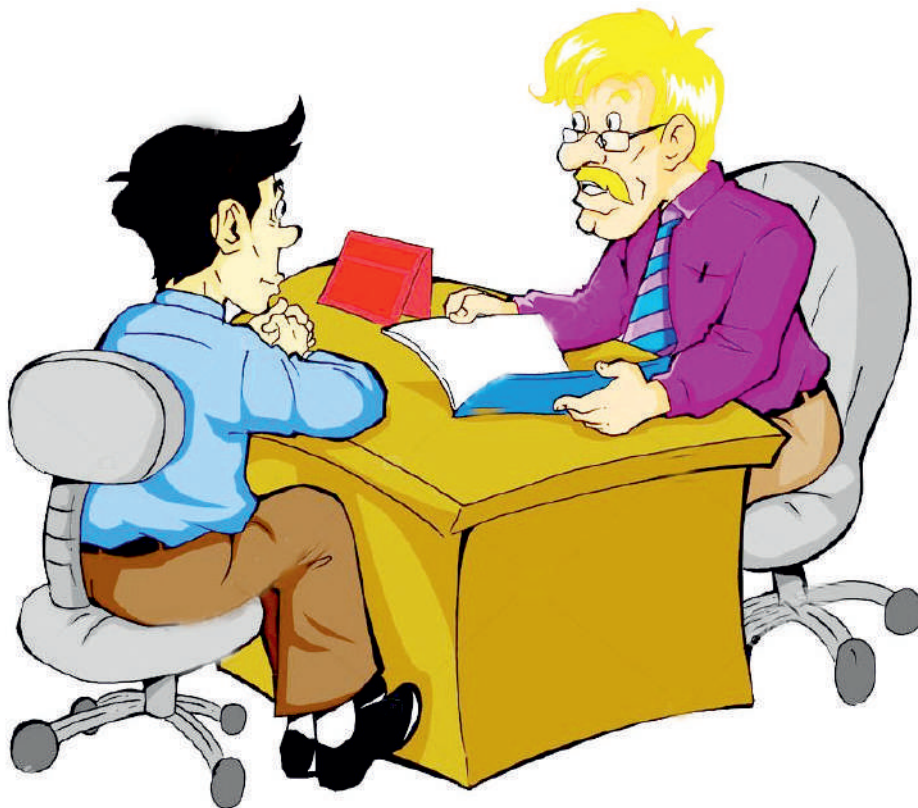
'सर, पी.सी. शर्मा।' युवक ने अत्यन्त शिष्टता से उत्तर दिया।

'उठो! मैं कहता हूँ उठो! इसी वक्त तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कुर्सी पर बैठने की।' अफसर दहाड़ा। पी.सी. शर्मा घबराकर उठ गया।

'मुझसे कोई गलती हुई सर?' पी.सी. रिरियाया। उसकी रिरियाहट देखकर अफसर के होठों पर स्मित की एक लहर सी उठी, जिसे उसने सायास दबा दिया।

'तुम लोगों ने हमारा बहुत शोषण किया है। बहुत अपमानित किया है हमें। अब तुम्हारी बारी है, समझे!' अफसर एक पुरानी फाइल टटोलते, मगर सर, मैं तो आपसे पहली बार मिल रहा हूँ। फिर आप इतने बड़े आदमी। मैं आपका शोषण कैसे कर सकता हूँ। 'तुमने नहीं किया तो क्या हुआ, तुम्हारे बाप-दादाओं ने किया है।'

'परन्तु सर, मेरे बाप-दादा भी आपसे कभी...' इसी समय युवक की नजर अफसर की नेम प्लेट पर पड़ी। अब जाकर उसे सारा



माजरा समझ में आया। कहने लगा, 'सर, मैं मानता हूँ कि उन्होंने गलत किया। लेकिन मैं प्रोग्रेसिव हूँ। समानता में विश्वास रखता हूँ। मैं आपके साथ एक ही थाली में खाना खाने को तैयार हूँ।'

'सब कहने की बातें हैं। संस्कार नहीं मिटते। कुत्ते की पूंछ को बारह साल तक नाली में रखो, तब भी वह टेढ़ी की टेढ़ी रहती है, समझे।'

युवक की टांगें थकान, निराशा और अपमान से कांपने लगीं। उसने चुपचाप फाइल उठाई और बाहर तिराहे पर आ गया। फाइल पर से उसकी पकड़ ढीली पड़ने लगी।



माधव नागदा

वरिष्ठ लघु कथाकार

लाल मादड़ी, नाथद्वारा

जिला राजसमंद

मो. 9829588494

जल है तो कल है

SAVE WATER

जल बचाएं, व्यर्थ न बहाएं

पानी है अनमोल...



पानी की महत्ता से कोई अनजान नहीं, लेकिन इसके सदुपयोग के लिए जागरूकता आवश्यक है। सभी आमजन जागरूक होंगे, तभी जल बचाने के इन प्रयासों में सफलता पाई जा सकती है।

प्रकृति ने हमें कई अनमोल तोहफों से नवाजा है इनमें से पानी भी एक है। कोई खाना खाए बिना तो दो-तीन दिन गुजार सकता है लेकिन पानी के बिना जिंदगी गुजारना असंभव है। इन्सान हो या जानवर कोई भी पानी के बिना जिन्दा नहीं रह सकता। देश के दूर-दराज क्षेत्रों में लोगों को खाना बनाने, पीने, कपड़े धोने, नहाने और दैनिक जीवन की दूसरी आवश्यकताओं के लिए साफ पानी नहीं मिल पाता है। कहने को तो जल ही जीवन है लेकिन जहाँ पर जल ही नहीं, वहाँ जीवन कैसा होगा, इसका अनुमान आप स्वयं लगा सकते हैं। मनुष्य ने विज्ञान की प्रगति के साथ आज अभूतपूर्व उपलब्धियाँ हासिल की हैं। किन्तु प्रकृति की शक्तियों को हथ लेने के कारण यह दुष्परी तलवार साबित हो रहा है। वर्तमान में नदियों का स्वरूप बिगड़ता जा रहा है। घरे का कचरा, पूजा पाठों का कचरा, हम नदियों में फेंक रहे हैं। एक तरफ आस्था के संग हम पर्वों पर नदी की पूजा करते हैं। दूसरी ओर अगले दिन ही हम नदी में विभिन्न अपशिष्ट को डालने में तनिक भी संकोच नहीं करते। नदी का संरक्षण अविलम्बता एवं निर्मलता आज समय की माँग है। मानव निर्मित प्रदूषण ने विभीषिका का रूप धारण कर लिया है। इसी कारण धीरे-धीरे भूगर्भ जल का लेवल नीचे गिरता जा रहा है। नदियाँ सूख रही हैं। जलीय जीव, नदियों का सांस्कृतिक लगाव, जल आधारित आजीविका के साधन स्रोतों में ह्रास हो रहा है। लोगों में नदी एवं जल जागरूकता सम्बन्धी कार्यक्रम आयोजित करने सहित संरक्षण के लिए साझा प्रयास करने की जरूरत है। जल की महत्ता से कोई अनजान नहीं, लेकिन इसके सदुपयोग के लिए जागरूकता आवश्यक है। सभी जागरूक होंगे, तभी जल बचाने के इन प्रयासों में सफलता पाई जा सकती है।



विश्व में सबसे ज्यादा जल दोहन
भारत में भूजल का दोहन लगातार बढ़ रहा है। वैज्ञानिकों सहित अनेक लोगों को लगता है कि यह दोहन लगभग रेखा लॉच रहा है। गौरवलेख है कि पूरे विश्व में भूजल दोहन के मामले में हम पहली पायदान पर हैं। भारत का सालाना भूजल दोहन लगभग 230 घन किलोमीटर है। यह दोहन पूरी दुनिया के सालाना भूजल दोहन के 25 प्रतिशत से भी अधिक है।
भारत की लगभग 60 प्रतिशत खेती और लगभग 80 प्रतिशत पेयजल योजनार्थ भूजल पर निर्भर हैं। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में हर साल प्रकृति जितना पानी भूगर्भ में रीचार्ज करती है, उससे अधिक पानी बाहर निकाला जाता है। गुजरात, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, पाण्डुचेरी और दमन में भूजल का सालाना दोहन, प्राकृतिक रीचार्ज के 70 प्रतिशत से अधिक है। देश के बाकी राज्यों में भूजल दोहन 70 प्रतिशत से कम है।

फैक्ट फाइल

धरती पर
2,94,000,000
व्यक्तिगत मोटर पानी उपलब्ध है, जिसमें से सिर्फ 2.7 प्रतिशत पानी ही शुद्ध और पीने लायक है

धरती पर पानी की उपलब्धता

एक स्टडी के अनुसार धरती पर 2,94,000,000 व्यक्तिगत मोटर पानी उपलब्ध है, जिसमें से सिर्फ 2.7 प्रतिशत पानी ही शुद्ध और पीने लायक है व पृथ्वी पर पानी अधिकतर तरल अवस्था में उपलब्ध होता है, क्योंकि हमारी धरती सोलर सिस्टम-की सीध में स्थित है। अतः यहाँ तापमान न तो इतना अधिक होता है कि पानी उबलने लगे न ही तापमान इतना कम होता है कि वह बर्फ में बदल जाये व जब पानी जमता है तब वह विस्तारित होता है यानी फैलता है जबकि ठोस बर्फ तरल पानी में तैरती है।

पृथ्वी पर उपलब्ध समग्र जल में से लगभग 2.7 प्रतिशत जल स्वच्छ है जिसमें से लगभग 75.2 प्रतिशत जल ध्रुवीय क्षेत्रों में जमा रहता है और 22.6 प्रतिशत भूजल के रूप में विद्यमान है।

पृथ्वी पर उपलब्ध पानी: जल वैज्ञानिक चक्र के माध्यम से चलायमान है। अधिकांश उपभोक्ताओं जैसे कि मनुष्यों, पशुओं अथवा पौधों के लिए जल की जरूरत होती है। जल संसाधनों की गतिशील और रिमाइकलिंग नेचर और इसके प्रयोग की बारम्बार जरूरत को देखते हुए यह



जरूरी है कि जल संसाधनों को उनकी प्रवाह दरों के अनुसार मापा जाए। इस प्रकार जल संसाधनों के दो पहलू हैं। अधिकतर विकास की जरूरतों के लिए प्रवाह के रूप में मापे गए गतिशील संसाधन अधिक उपयोगी हैं। आरक्षित भण्डार की स्थिर अथवा नियत प्रकृति और साथ ही जल की मात्रा तथा जल निकास के क्षेत्र की लम्बाई व मछली पालन, नौ संचालन आदि जैसे कुछेक क्रियाकलापों के लिए भी प्रामाणिक है।

तीन चौथाई हिस्से पर महासागर...

पृथ्वी के लगभग तीन चौथाई हिस्से पर विश्व के महासागरों का अधिकार है। संयुक्त राष्ट्र के अनुमानों के अनुसार पृथ्वी पर जल की कुल मात्रा लगभग 1400 मिलियन घन किलोमीटर है जो कि पृथ्वी पर 3000 मीटर गहरी परत बिछा देने के लिए काफी है। तथापि जल की इस विशाल मात्रा में स्वच्छ जल का अनुपात बहुत कम है। पृथ्वी पर उपलब्ध समग्र जल में से लगभग 2.7 प्रतिशत जल स्वच्छ है जिसमें से लगभग 75.2 प्रतिशत जल ध्रुवीय क्षेत्रों में जमा रहता है और 22.6 प्रतिशत भूजल के रूप में विद्यमान है। शेष जल झीलों, नदियों, वायुमण्डल, नमी, मृदा और वनस्पति में मौजूद है। जल की जो मात्रा उपभोग और अन्य प्रयोगों के लिए वस्तुतः उपलब्ध है, वह नदियों, झीलों और भूजल में उपलब्ध मात्रा का छोटा सा हिस्सा है। इसलिए जल संसाधन विकास और प्रबन्ध की बाबत संकट इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि अधिकांश जल उपभोग के लिए उपलब्ध नहीं हो पाता और दूसरे इसका विषमतापूर्ण स्थानिक वितरण इसकी एक अन्य विशेषता है। फलतः जल का महत्व स्वीकार किया गया है और इसके किफायती प्रयोग तथा प्रबन्ध पर अधिक बल दिया गया है।



बनो सच की ताकत जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर अब आपकी जुबानी..

अब आप भी भेज सकते हैं खबर

ताजा खबरों से अपडेट रहने के लिए



करें

YouTube
Jaivardhan
News

कागद कंवर साहब रौ

लिखी धरनाट बंध, भणजो हरनाट बंध। छोरा-छोरी हगला सामर गया, म्हा अटे रुई लीधा थॉई वटे रुई लीजो। कंवर सा. रो लिख्यो कागद होराजी जदी भण्यो तो कालजो बैठी ग्यो। हाऊजी देख्यो अबार थोड़ी वगत पेली तो ठाबंद वातां करी रिया हा। अचानक अणारे कई व्हियो, पूछें तो खरी।

घर वाली ने कई धबको जोर रो न्ही अई जावे अणी वास्ते घर वाला आपणे हात (हाथ) री लिखी चिट्ठी भणवा लाग्या। गाम मादड़ा सु ऐतान लिखी सिद्ध सिरी अनेक ओपमा लायक कुँवर सा, व्याईजी सा, वैवाइजी सा नै राम-राम बंचावसी। अपरंच अटे हगला जणा राजी खुसी हाँ, आप भी भगवान री किरपा ऊँ राजी खुसी विराजता वोगा। अस्कूलां म्हे उनाला री छुट्टियाँ पड़ी है। भाण्या-भाणी ने नानेरा भिजावो। मामाजी वणा ने लेवा ने कदी आवे चिट्ठी रा पडूतर में लिख भेजाओ। म्हाणे हगला ने घणी याद अई री है। आप सब रे सरिर री ओसान रखावजो गरमी घणी पड़ी री है।

पण भगवान अश्यो कई व्हियो म्हारी हमझ म्हे न्ही अई रियो, कई वजोक् जाणी तो न्हीं।

अतराक म्हे मोबाइल परे बेना बाई रो फोन आयो। वा तो मळकती-मळकती वात करी री ही। बाऊसा पूछियो दोइता-दोइती



मेवाड़ी चौपाल

कठे है वणाऊ वात कराव। बेना बोली- टाबर तो अबार सांभर घूमवा गया, दो-चार दना म्हे आवा वाला है। कंवर साहब थोड़ीक टेम पैली पिंजारा रे अटे घास्या, रजाया न असीसा (तकिया) भरावा गया। चालीस किलो रुई परी लीधी विस्तरा से काम आगो वेई। आप रुई लेवा रे वास्ते केई रिया हा, जो लीधी क न्ही लीधी। टाबर सांभर-जैपुर घूमी न अई पछे म्हा हाथे ईज आवा। कंवर साहब पछे अई।

मोबाइल परे बेटी री बात हुणीया केडे भाईजी ने साता मली। वात हमझ म्हे अई क जँवाईजी सांभर म्हे टीली लगावणो परो भूल्या। मने ई कई गतागम न्ही पड़ी। ठीक रियो फोन परो आयो, न्ही तो अरथ रो अनरथ वेई जातो।



नरेन्द्र कुमार मेहता

वरिष्ठ साहित्यकार
हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी
तेलियो का तालाब, नाथद्वारा
राजसमंद, 9829960055

सन-शार्इन इंस्टीट्यूट
ऑफ आईटी

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स



RKCL
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र

Tally, DTP,
PGDCA

प्रवेश प्रारम्भ

पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा

मो. 9649813798, 9950084705

फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696



The Marutinandan Grand



LUXURY HAS A NEW EXPRESSION IN NATHDWARA

The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001

www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073



**AVAILABLE
STREAMS**

SCIENCE

PHYSICS,
CHEMISTRY,
BIOLOGY,
MATHEMATICS

COMMERCE

ACCOUNTANCY,
BUSINESS STUDIES,
ECONOMICS,
MATHEMATICS

ARTS

HISTORY
DRAWING
ECONOMICS
GEOGRAPHY
POLITICAL SCIENCE
SANSKRIT LITERATURE
ENGLISH LITERATURE
HINDI LITERATURE
COMPUTERS
& Many More Subjects

The Creative Brain Academy

(An ISO 9001:2015 Certified Brand Of Quality Education)

Vill - Maja, Opp. Helipad, Via - Jagan Marble Road,
Jambu Talab, Gunjol, Rajsamand

Ph. 9610710500

Ph. 9610710519

WITH OUR UNIQUE PLAN OF

SIP

SCHOOL INTEGRATED PROGRAMME

NOW PREPARE FOR

JEE
(FOUNDATION)
NEET
(FOUNDATION)
CUET
(FOUNDATION)
CA-
FOUNDATION
CS-EET
STSE
NTSE
OLYMPIADS

जयवर्द्धन
NEWS

जयवर्द्धन

C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल,
सौ फीट रोड, राजसमंद मो. 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन